પુસ્તક ૨ જું.] પોષ : વીર સંવત ૨૪૬૮. [અંક ૩

શ્રીમદ્ પંન્યાસ રત્નવિજયજી મહારાજ

તંત્રી :
લક્ષ્મીચંદ પ્રેમચંદ શાહ.

પ્રકાશક
ભોગીલાલ સાંકળચંદ શેઠ.

વાર્ષિક લવાજમ.] **વિષય-દર્શન.** [રૂપિયા, બે.

પોષ-મહા, વિ. સં. ૧૯૯૮.

વિષય.	લેખક.	પૃષ્ઠ.
શ્રી પાર્શ્વનાથ જન્મકલ્યાણુક.	મુનિ શ્રીહેમેન્દ્રસાગરજી.	૭૩
श्री आदिनाथ चरित्र पद्य.	जैनाचार्यश्रीजयसिंहसूरिजी.	७४
श्री गुरुपट्ट प्रदीपिका.	जैनाचार्यश्रीविजयपद्मसूरिजी.	७५
शास्त्रसम्मत मानवधर्म और मूर्तिपूजा.	पूज्य मु. श्री. प्रमोदविजयजी.	७७
"શ્રીસિદ્ધચક્રની તાત્ત્વિક ભાવના."	જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયપદ્મસૂરિજી.	૭૯
"ધર્મ્ય વિચાર."	ઉપાધ્યાય શ્રીસિદ્ધિમુનિજી.	૮૧
जैन समाजकी स्थिति और कर्तव्य.	आर्य जैनमुनि सुखलाल(स्थानकवासी)	८३
"પ્રશ્નોત્તર..."	ઝવેરચંદ છગનલાલ સુરવાડાવાળા.	૮૫
જિનવાણીની મહત્તા.	મુનિ શ્રીસુશીલવિજયજી.	૮૬
ઔપદેશીક સજ્ઝાય.	મુનિ શ્રીયશોભદ્રવિજયજી.	૮૭
सानुवाद जीवविचार प्रकरणम्.	मुनिश्री दक्षविजयजी.	८७
"સજોડે સ્વાર્પણ."	બાપુલાલ કાળીદાસ સંઘાણી.	૮૯
समाजका एकपक्षीय न्याय.	मुनि श्री भद्रानंदविजयजी.	९१
ન...ફ્ફ...ટ...નાં......ન...ખ...રાં.	શ્રીમાન ઉંધી ખોપરી.	૯૨
"મનસાગરનાં મોજાં"	બાપુલાલ કાળીદાસ સંઘાણી	૯૪
રાધનપુરની વરખડીની પ્રાચિનતા.	લક્ષ્મીચંદ પ્રેમચંદ.	૯૫
ચિતોડગઢમાં પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવની તૈયારીઓ.	તંત્રી.	૯૭
પન્યાસનું વિહાર વર્ણન.	તંત્રી.	૧૦૦
પૂજ્ય આચાર્યદેવનું સ્વર્ગ-ગમન.	તંત્રી.	૧૦૨
વર્તમાન-સમાચાર.	"	૧૦૪

વદિ ૬, ગુરૂ શ્રીપદ્મપ્રભુ ચ્યવનદિન.
વદિ ૧૨, બુધ શ્રીશીતળનાથ જન્મ અને દીક્ષાદિન તથા આદિનાથ મોક્ષદિન અને મેરતેરશ.
વદિ ૦)) શુક્ર શ્રીશ્રેયાંસનાથ કેવલદિન.
સુદિ ૨, રવિ શ્રીઅભિનંદન જન્મદિન અને શ્રીવાસુપૂજ્ય કેવલદિન.
સુદિ, ૩, સોમ શ્રીધર્મનાથ અને વિમલનાથ જન્મદિન.

સુદિ ૪, મંગળ શ્રીવિમલનાથ દીક્ષાદિન.
સુદિ ૮, શનિ શ્રીઅજિતનાથ જન્મદિન.
સુદિ ૯, રવિ શ્રીઅજિતનાથ દીક્ષાદિન.
સુદિ ૧૦, મંગળ શ્રીમલ્લિનાથ પ્રભુની ભોયણી વર્ષગાંઠ અને રોહિણીદિન.
સુદિ ૧૨, ગુરૂ શ્રીઅભિનંદન દીક્ષાદિન.
સુદિ ૧૩, શુક્ર શ્રીધર્મનાથ દીક્ષાદિન.

પંચાંગ.

વાદ ૧૨ ક્ષય
શુદિ ૧૦ બે

તિથિ.	વાર.	તારીખ.
વ૧	શનિ	૩
૨	રવિ	૪
૩	સોમ	૫
૪	મંગળ	૬
૫	બુધ	૭
૬	ગુરૂ	૮
૭	શુક્ર	૯
૮	શનિ	૧૦
૯	રવિ	૧૧
૧૦	સોમ	૧૨
૧૧	મંગળ	૧૩
૧૩	બુધ	૧૪
૧૪	ગુરૂ	૧૫
૦))	શુક્ર	૧૬
સુ૧	શનિ	૧૭
૨	રવિ	૧૮
૩	સોમ	૧૯
૪	મંગળ	૨૦
૫	બુધ	૨૧
૬	ગુરૂ	૨૨
૭	શુક્ર	૨૩
૮	શનિ	૨૪
૯	રવિ	૨૫
૧૦	સોમ	૨૬
૧૦	મંગળ	૨૭
૧૧	બુધ	૨૮
૧૨	ગુરૂ	૨૯
૧૩	શુક્ર	૩૦
૧૪	શનિ	૩૧
૧૫	રવિ	×૧

×ફેબ્રુઆરી૨૮

દ્વારાઃ-વિજયનીતિસૂરિ જૈન પુસ્તકાલય, ગાંધીરોડ, અમદાવાદ.

જૈનધર્મ વિકાસ.

પુસ્તક ૨ જું. પોષ, સં. ૧૯૯૮. અંક ૩ જો.

શ્રી પાર્શ્વનાથ જન્મ કલ્યાણક.

(રાગ–મેરે મૌલા બુલાલે મદિને મુઝે)

સ્વામી પાર્શ્વ પ્રભુને, ભવિભાવે સ્મરે,
અહિ લાંચ્છન લાંચ્છન, હીન ખરે–ટેક
દશમ પ્રાણુતથી ચવ્યા, વામા કુખેથી અવતર્યા,
શુભ નીલ દેહે શોભતા, સુખકર સદા શાંતિ ભર્યા;
જ્યારે હર્ષે જગત ઋતુરંગ ધરે–સ્વામી–૧
દિક્કુમારી દિવ્યછપ્પન, કાર્ય સૂતિકાનું કરે,
ઈન્દ્ર ચોસઠ શિર કરે, અભિષેક મેરૂ શિખરે;
જન્મ મહોત્સવ અશ્વસેન તાત કરે–સ્વામી–૨
જન્મ કલ્યાણક પ્રભુનું, પોષ વદિ દશમી બને,
સફળ થાતો જન્મ ભજતાં, આજ દિન પ્રભુ નામને;
આજે તપ એકાશન ભવ્ય ચરે–સ્વામી–૩
અજ્ઞાનમય ક્રિયા કમઠની, કહી દીધી એ આકરી,
નવકાર દાને નાગને, ધરણેન્દ્રપદ સ્થાપિત કરી
જગમાં જીવદયાનો જયકાર કરે,–સ્વામી–૪
પરણ્યા પ્રભાવતી આગ્રહે, નિજ માતના 'ને' તાતના,
પણ ચિત્તમા ભાવો રહ્યા, એ ભોગમાં વૈરાગ્યના;
ભોગ કર્મોદયે વ્યવહાર ધરે.–સ્વામી–૫
નિજ નમ્રતાને દાખવી, નીતિ પંથને ઉજ્જવલ કર્યો.
ઋણુ મુક્ત વસુધાને કરી, ઉર દાનનો મંત્ર ધર્યો;
લઇ સંયમ કેવળજ્ઞાન વરે-સ્વામી–૬
વર્ષ શત પુરાં કરી, ઉદ્ધરી જગ પાલક થયા,
સમ્મેતશિખરે પાર્શ્વ પ્રભુ, નિર્વાણ પદવીને વર્યા;
નવ હાથ ઉંચી પ્રભુ કાય ધરે–સ્વામી–૭
અમૃત સમવાણી પ્રભુની, અજિત પદવી આપતી,
બુદ્ધિ નિર્મળ જે કરે, તે આત્મ બંસી બજાવતી;
મુનિ **હેમેન્દ્ર** પ્રભુના ગાને તરે–સ્વામી–૮

રચયિતા–**હેમેન્દ્ર સાગર**

॥ श्री आदिनाथ चरित्र पद्य ॥

(जैनाचार्य श्रीजयसिंहसूरीजी तरफथी मळेलुं)

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૪૩ થી અનુસંધાન)

यह सुन राजा आये कोषा, जाना पूर्व जन्न कर पोसा ॥
देखकुंवर शांती कर लीनी, मणि माली मनमें यह चीनी।
है यह पूर्व जन्म कर भाई, राज कोष तेहि नियत समाई ॥
पुनि ज्ञानी सन पूछी बाता, सुन कर बात पिछाने ताता।
जैन धर्म तब तुरत सुनाया, अजगर सुन मन अति सुहाया ॥
धर्म प्रभाव देह पुनि त्यागी, हुआ तुरत देव गति भागी।
देव लोकमें तुरत सिधावा, पुत्र प्रेमवस पुनि यहां आवा ॥
दिव्यहार मोतियनका भारी, सो दीना निज पुत्र संभारी।
वही हार सोहत तुम राजा, बक्षस्थल पर रहत विराजा ॥

तिनहि नृपति के वंसमें, भूषण तुम महाराज।
सदबुद्धी के वंसमें, में हूं गरीब निवाज ॥

बिन अवसर में धर्म सुझावा, सोकारण सुनिये मन भावा ॥
आज गयामे नन्दन बनमें, तहां देखे दोय मुनिवर मगमें।
महा तेज अति प्रतिभाषाली, निरख तेज मन हो हरियाली ॥
तिन दर्शन कर वंदन कीनी, वाणी सुनी धर्म रस भीनी।
पुनि तुम आयु पूछ प्रमाणा, एक मास तब मुनिहीं बखाणा ॥
यहि कारण सुनु श्रीमहाराजा, कहा करन धर्म कर काजा।
यह सुन महाबल राजा बोले, धन्य मंत्री मम मन पट खोले ॥
तुम सम मंत्री मिले जे राजा, अति बड़ भाग बनें सब काजा।
सत्य धर्म तुम दिया बताई, धन्य मंत्रीवर तुम चतुराइ ॥

सत्य कहो अय मंत्रीवर, कोन धर्म में पाऊं।
मुझको सत्य बतायदे, धर्म रत्न को ठाऊं ॥

अमर अल्प अति दुस्तर पापा, यासे मम मन हो संतापा।
कहेउ मंत्री सुन श्री महाराजा, शांत चित्त हो कीजे काजा ॥

यति धर्म भंजन भय शोका, है अति सुख कर यह पर लोका।
तेहि धर्म तुम शरणे जाओ, मन चिंता सब दूर भगाओ ॥
एक दिवस जे दिक्षा पाली, मिले मोक्ष तिन संषय खाली।
मंत्री बात मान कर राजा, कुंवर राज्य कर दीना साजा ॥
मन भर दान नृपति पुनि कीना, नगर रंक नहीं जावत चीना।
नगर मांहि सब मंदिर माहीं, किया महोत्सव अति हर्षाइ ॥
पुनि मुनिवर चरणन शिरनावा, दिक्षा तुरत नृपति अपनावा ॥
चतुर भोग त्याग तत्काला, बाइस दिन यहि भांति निकाला।
पंचपरमेष्टी कर सुन्दर ध्याना, देह त्याग पहुचा निज धामा ॥

दूसरा भव समाप्त

॥ श्री गुरुपट्ट प्रदीपिका ॥

रचयिता–जैनाचार्य श्रीविजयपद्मसूरिजी.

॥ आर्यावृत्तम ॥

वंदिय वीरजिणिंदं–गुरुवर सिरिणेमि सूरिपयकमलं ॥
कयवरमंगलमालं–गुरुपट्टपईवियं कुणमो ॥१॥
सासणनायगवीरं–अज्जसुहम्मं[1] विसिट्ठपुण्ण निहिं ॥
जंबू सामिं[2] पहवं[3]–सिज्जंभवं[4] मिज्जजसभद्दं[5] ॥२॥
संभूइ भद्द बाहू[6]–वंदे सिरिथूलि भद्दं[7] मिज्जपयं ॥
तप्पट्टहरे य दुवे–अज्जमहागिरि सुहत्थीसे ॥३॥
सुट्ठिय सुप्पडिबद्धे[9]–वंदे पत्रदिंद दिण्णं[10] दिण्ण गुरूं[11] ॥
सीहं[12]गिरि वज्जसामी[13]–थुणमो सिरि वज्जसेणं[14] गुरुं ॥४॥
सिरिचंदं[15]सूरि सामं–तभद्द[16] गुरु वुड्ढदेवं[17] सूरी से ॥
पज्जोयणं[18] सूरीसं–णविमो सिरिमाणं[19] देव मंहं ॥५॥
सिरिमाण तुंगसूरिं[21]–वीरं जयदेवं[22] सूरि मिज्जपयं ॥
देवाणंदं[23] विक्कमं[24]–नरसीह[25] समुद्दं[26] सूरिवरे ॥६॥
सिरिमाणदेव[27] विउहे[28]–पुज्जजयाणंदं[29] रविपहायरिए[30] ॥
जसदेवं[31] पज्जुण्णं[32]–वंदे सिरिमाणदेव[33] मंहं ॥७॥

सिरि विमल[34]चंदपरमो-ज्जोयण[35]गुरुसव्वदेव[36] देव[37]गुरू ॥
सिरिसव्वदेव[38]सूरिं-दो सीसे तस्स पट्टहरे ॥८॥
जसभद्दणेमि[39]चंदे-मुणिचंद[40]ायरिय मजियदेव[41]महं ॥
सिरिविजय[42]सीहमिज्जं-सिरिसोमपहंच मणिरयणं[43] ॥९॥
जगचंदं[44] देविंदं[45]-पुज्जे सिरिधम्मघोस[46]सोम[47]पहे ॥
सिरिसोमतिलय[48]सूरिं-देवाइमसुंदरं[49] णममो ॥१०॥
सिरि सोमाइम सुंदरं[50]-मुणिसुंदर[51] रयणसेहरा[52]यरिए ॥
लच्छीसायरं[53] सुगुरुं-थुणमो सिरि सुमइसाहुं[54] च ॥११॥
सिरि हेमविमल[55]माणं-दविमल[56] विजयाइदाण[57]हीर[58]गुरू ।
जिण धम्मगयणभाणू-परोवयारिक्कतल्लीणे ॥१२॥
सिरि सेण[59] देव[60] सीहे -सूरिप्पवरे गणाहिवे सुगुणे ।
जिण सासणप्पईवे-नमंसिमो भत्ति बहुमाणा ॥१३॥
सिरिदाण सूरिसीसे-वायगगणिधम्मसायरे नाणी ॥
वाइमयंगय सीहे-खमाइयगुणे थुणेमि सया ॥१४॥
तयणु गणी जसविजए-सम्मत्तपबोहसंजमाइगुणे ॥
जिणधम्मपयासयरे-कयसत्थगणे पवंदेमो ॥१५॥
अज्ज सुहम्माउ कमा-णिदंसिया इक्कसट्ठिपट्ट हरा ॥
अगणियपहाव कलिया-तेसुं निवबोहगा केई ॥१६॥
जिण सासणप्पयासा-केई सुहसील केवला केई ॥
परिजवियसूरि मंता-विज्जा लद्धिप्पहावड्ढा ॥१७॥
णिग्गंथ कोडियगणा-सुचंदवणवासिसिट्ठवडगच्छा ॥
सूरिक्कमेण जाया-तवाभिहाणो य जगचंदा ॥१८॥
सिरि सीहसीससच्चो-आयरियपयारिहो समुद्धारो ॥
जेण कओ किरियाए-कप्पूर खमा जिणा कमसो ॥१९॥
उत्तम पउम सुरूवा-कित्ती कत्थूर पुज्जमणिविजया ॥
गुरुबुद्धिवुड्ढिसीसा-संजाया णेमिसूरीसा ॥२०॥
तेसिं पउमरकेणं-सीसेणं सूरिणा गुरुपसाया ॥
रिसिणिहिणंदिंदुमिए-विक्कमवरिसे सिए माहे ॥२१॥
वरसत्तमीइ रइया-गुरुपट्टपईविया पमोयाओ ॥
नियपर कल्लाणट्ठं-जइणउरी रायणयरम्मि ॥२२॥

शास्त्रसम्मत मानवधर्म और मूर्तिपूजा.

(लेखक)—पूज्य मु. श्री. प्रमोदविजयजी म. (पन्नालालजी)

(ગતાંક. પૃષ્ઠ ૪૬ થી અનુસંધાન)

यदि सार्वजनिक धार्मिक और व्यावहारिक दृष्टि से भी मूर्ति के संबंध में गंभीरता पूर्वक विचार किया जाय तो यह स्पष्ट प्रमाणित है की मूर्ति ही प्रत्येक धर्म संस्कृति के टिकाव का मुख्य साधन है। इसके अवलंबन विना किसी भी धर्मने संसार में अपना अस्तित्व नही रखा है और न दूसरे पर प्रभाव ही अंकित किया है। आज तक जिन धर्मों का ससार में अस्तित्व दृष्टि गोचर हो रहा है उनका मुख्य कारण प्रतिमा को स्वीकार करना ही है। जिस धर्म में मूर्ति (प्रतिमा) का स्थान नहीं है वह धर्म अपनी गति, स्थिति और संस्कृति चिरकाल पर्यंत कदापि कायम नहीं रख सकता है। हम देखते हैं कि जिन धर्म संस्थापकों ने प्रतिमा का सर्वथा खंडन किया है अथवा इस मान्यता को अज्ञानता मूलक बतलायी है उन्हीं धर्म नायकों का धर्म आज संसार से अपना अस्तित्व मिटाता हुआ नजर आ रहा है। जैन धर्म जो अपनी संस्कृति को और अस्तित्व को कायम रख सका है वह प्रतिमा पूजा के बल पर ही। वास्तव में जैन संस्कृति के टिकाव में मुख्य सहायकभूत प्रतिमा ही है। देखो भारत में बुद्ध देव (गौतम बुद्ध) का जन्म होने और अपने बौद्ध धर्म का प्रचुर प्रचार करने पर भी उन को मूर्तिपूजा व्यवस्थित रूप में न होने के कारण अद्यावधि पर्यंत बुद्ध संप्रदाय का आस्तित्व प्रायः नहीं जेसा ही हो गया है। इसके विपरीत विदेशों में धर्म प्रचार न किये जाने पर भी उनकी मूर्ति पूजा से आज भी वहां बौद्ध धर्म का आशातीत प्रभाव है।

आज जो जैन समाज अपना अस्तित्व इतर समाज के समक्ष सगर्व कायम रख सका है उसका अधिकांश श्रेय ईन मंदिरों और मूर्तियों को ही है। यदि ये प्राचीन मंदिर न होते तो हम आज अपना गौरव कायम नहीं रख सकते थे। ये मंदिर और मूर्तियां हमारी धर्मपरायणता; प्रभु भक्ति तत्परता और जैनत्वके माहात्म्य की सूचिका हैं। इनके द्वारा हमें अपनी संस्कृति को कायम रखते और स्वधर्म का अधिकाधिक प्रचार करने में पूर्ण सहायता प्राप्त हुई है। जिन स्थानों पर साधु समाज जा नहीं सकता है अथवा गया नहीं है वहां भी वैसी ही धर्म भावना और उसी संस्कृति को कायम रखने के लिये मंदिर और मूर्तियों की आवश्यकता रहा करती है। साधु समाज सर्वत्र विचर नहीं सकता। वर्तमान में भी ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जहां कि साधुओं का आवागमन प्रायः नहीं होता है और वहां के लोक केवल मंदिरों के आधार पर अपने जैनत्व संस्कार को कायम रख रहे हैं। इन मूर्तियों को और मंदिरों को स्थान देने से मनुष्य कभी न कभी तो उस ओर अवश्य आकर्षित होता है। जो साधु समाज के

सामने मस्तक झुकाने में संकोच करता है वह प्रभु प्रतिमा के सामने तो निस्संकोच सिर झुका ही देता है यह प्रतिमा की ध्यानस्थ सौम्य मुद्रा गुण स्मरणका ही प्रभाव है। साधु समुदाय का तो अन्त सहसा आ भी सकता है किंतु इन मंदिरों और मूर्तियों का सहसा अन्त आजाना कल्पना से पर ही है।

साधु समाज का जितना प्रभाव वर्तमान में असर नहीं कर सकता उतना असर इन मूर्तियों का मानव हृदय पर होता है। जब कि विज्ञ समाज भी ईस प्रभाव से वंचित नहीं रह सकता है तो अल्पज्ञजन तो इससे वंचित ही कैसे रह सकते हैं ? मूर्ति ही धर्म मार्ग प्रदर्शिका है। साधु समाज का तो सतत समागम नहीं हो सकता है वास्ते हमेशा उतनी धर्म भावना के जागृत रहने में संदेह भी रहता है किंतु मूर्ति का समागम सतत कर सकते हैं और अपनी धार्मिक प्रवृत्तियों को उत्तेजना भी उनसे मिल सकती है। हमारे सामने वर्तमान में भी ऐसे अनेक प्राचीन तीर्थस्थान विद्यमान हैं जिनके द्वारा हम अपनी पूर्व संस्कृति का और जैनियों की प्रतिष्ठा पूर्ण जाहोजलाली का सम्यकतथा स्मरण कर सकते हैं। जब विरोधियों, विपक्षियों एवं शत्रुओं ने भारत माता पर आक्रमण किया और धर्म की नौका अगाध समुद्र में डगमगा रही थी उस समय उसकी रक्षा करनेवाली और संस्कृति का स्वरूप ज्ञान कराने वाली ये मूर्तियां ही थीं ओर ये ही दिव्य मंदिर थे। यदि उस समय इन मंदिरों और मूर्तियों का बाहुल्य न होता तो क्या जैन समाज या अन्य कोइ भी समाज इन विपक्षियों का सामना कर सकता था ?

इन मूर्तियों से ही धर्म गौरव रहा है और रहेगा। किसी व्यक्ति विशेष में यह सामर्थ्य नहीं कि सतत इस प्रकार गौरव कायम रख सके। मूर्ति धर्म रक्षा को सिखाती है। मूर्ति की रक्षा ही धर्म रक्षा है और इसका अपमान करना या आशातना करना धर्म का अपमान करने के समान ही है। भारतवर्ष जो कि धर्मप्रधान देश माना जाता है उसके धर्म की रक्षा भी इन मूर्तियों से ही हुई हैं। प्राचीन काल से ही आर्य एवं अनार्य सभी लोक भक्तिभाव पूर्वक अपने इष्टदेव की मूर्ति की पूजा प्रतिष्ठा करते थे जिससे आज तक उनमें वे ही संस्कार परंपरागत चले आ रहे हैं। प्राचीनकालमें तो मूर्तिपूजा का प्रचार इतनी प्रचुरता से था कि वे लोग देवी देवताओं और प्रतिमाओं के अतिरिक्त वृक्षादि की पूजा करते थे। भारतीय ख्यात विख्यात धर्मोंमें जैनधर्म, वेदान्त धर्म और बौद्ध धर्म ही प्राचीन माने जाते हैं। इन तीनों धर्म के नायकों ने अपने धार्मिक विधि विधानों में मूर्ति और उसकी पूजा भी ऊंचा स्थान दिया है। वेदान्त धर्म और बौद्ध धर्म के शास्त्रों में तो मूर्ति पूजा और प्राचीन संस्कृति विषयक प्रमाण प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। आज भी इनके अनुयायी विषय संख्या में संसार व्याप्त हैं। वैदिक धर्मशास्त्र की नींव तो मूर्तिपूजा पर ही अवलंबित है। उसका मुख्य पाया मूर्तिपूजा ही है। (अपूर्ण)

શ્રી સિદ્ધચક્રની તાત્વિક ભાવના.

લેખક. જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયપદ્મસૂરિ.

(પુ. ૨ અંક ૧ પૃષ્ઠ ૪૮ થી અનુસંધાન)

માધ્યસ્થ્ય ભાવના=એટલે નિર્ગુણિ આત્માઓને દેખી તેઓના ઉપર દ્વેષ ન ધારણ કરે કારણકે રાગ કરવો વ્યાજબી નથી. કારણ જ્યાં ગુણ હોય ત્યાંજ રાગ થાય. તેમજ તે અરિહંત પ્રભુ છેવટે સાધુ અને શ્રાવક બંનેને ઉદ્દેશીને આ રીતે દેશના આપે છે કે જે જીવો [1] સંયમને સાધે, [2] પોતાની યોગ્યતાને અનુસારે સિદ્ધાન્તોનો અભ્યાસ કરે, તથા [3] શાસનની પ્રભાવનાના અનેક કાર્યો જેવા કે નવપદની આરાધના રથયાત્રા વિગેરે કરે, [4] વ્રતની આરાધના કરે, સાધર્મિક વાત્સલ્ય કરે, [6] સાત્વિક ભાવથી દાન દીએ, [7] જ્ઞાનને ભણતા જીવોને સહાય કરે [8] અનિત્ય ભાવના વિગેરે ઉત્તમ ભાવના ભાવે, [9] પ્રભુના આગમો લખાવે, [10] સર્વ જીવોને ખમાવે, [11] સર્વ પાપોની આલોચના કરે, તે જીવો હસતા હસતા આનંદથી ક્ષણભંગુર શરીરનો ત્યાગ કરી પૂર્વની સ્થિતિ કરતાં ઘણીજ ઉત્તમ સ્થિતિને પ્રાપ્ત કરે છે. એટલે બંને ભવને સફલ કરે છે. તેઓને મરણ કાલે લગાર પણ દીલગીરી હોતી નથી. કારણકે ધર્મી જીવોને અહીં આનંદ મંગલ હોય છે. અને આવતાં ભવમાં પણ આનંદજ હોય. તથા જે જીવો ઉપર જણાવેલા અગીઆર વાનાં ન કરે તે જીવો રીબાઈ રીબાઇને મરણ પામે છે. જન્મ્યો તેને મરવાનું તો છેજ કારણકે ધર્મી પણ મરે છે, અને અધર્મી પણ મરે છે પરંતુ ફરક એ છે કે જ્યારે ધર્મી જીવ આનંદથી મરે છે કારણકે તે સદાચારી છે. ત્યારે અધર્મી રીબાઈ રીબાઇને મરે છે. કારણ એજ છે કે તેણે ઘણા દુરાચારો સેવ્યા છે. જીવને દુષ્કર્મને ભોગવતાં જેવું ડહાપણ હોય છે, તેવું ડહાપણ જો દુષ્કર્મને બાંધતાં રહે, તો દુઃખી થવાનો સમય આવેજ નહિ માટેજ કર્મબંધના કારણો જરૂર સમવા જોઇએ, તે કારણોને પણ પ્રભુજી દેશનાદ્વારા સમજાવે છે. ગ્રંથ વધી જવાના ભયથી અહીં તે કારણો જણાવ્યા નથી (પરંતુ કલિકાલ સર્વજ્ઞ શ્રીહેમચંદ્ર સૂરીશ્વરજીએ તેસઠ શલાકા પુરૂષ ચરીત્રમાં તે કારણો જણાવ્યા છે. જિજ્ઞાસુ જીવોને તે દ્વારા લાભ મલી શકશે) જેવો પ્રેમ ધન વિગેરેમાં અને વિષ્ટા અને મૂત્રથી ભરેલી દુર્ગન્ધમય સ્ત્રી આદિમાં જીવને હોય છે, તેવોજ પ્રેમ જો ધર્મની આરાધનામાં જાગે તો જરૂર મુક્તિપદ પામી શકાય. આહાર નિદ્રા મૈથુન વિગેરે ક્રિયા જેવી મનુષ્ય કરે છે, તેવી તિર્યંચો પણ કરે છે. મનુષ્ય દેહની જે પ્રધાનતા કહી છે, તેનું કારણ એ છે કે તેનાથી સર્વ વિરતિ ધર્મ સધાય છે. બાકી દેશવિરતિ ધર્મ તો

તિર્યંચો પણ સાધી શકે છે ક્ષણભંગુર માનવ દેહ મોડા વહેલાં નાશ તો જરૂર પામવાનોજ. કારણ દેવાદિનું આયુષ્ય અને મનુષ્યનું આયુષ્ય એક સરખું હોતુંજ નથી. દેવ ઉંચા પર્વત ઉપરથી ઝંપાપાત ખાય, તો પણ તેઓના આયુષ્યનો ઘટાડો ન થઈ શકે અને મનુષ્યનું આયુષ્ય તો સાત કારણોદ્વારા ઘટીઘટીને સર્વથા ઘટી જાય છે તે સાત કારણો આ પ્રમાણે જાણવા. ૧ અધ્યવસાય ૨ નિમિત્ત ૩ આહાર ૪ વેદના ૫ પરાઘાત ૬ સ્પર્શ ૭ શ્વાસોચ્છ્વાસ. માટેજ વિશેષે કરીને મનુષ્યને સમયે સમયે સાવધાન રહેવાની જરૂર છે. જે જીવો ધર્મની સામગ્રી નથી પામ્યા તે ધર્મને ન સાધે, તેના કરતાં પામીને હારી જનારા જીવો વિશેષ હાંસીને પાત્ર કહેવાય, એટલાજ માટે અપ્રમાદી બની દાનાદિ ધર્મની આરાધના જરૂર કરવી કે જેથી મુક્તિપદ પામી શકાય. આવી અરિહંત પ્રભુની દેશના સાંભળી ઘણાંએ યોગાવાંચક જીવો હર્ષથી શક્તિને અનુસારે સર્વ વિરતિ આદિને અંગીકાર કરે છે.

આ પ્રસંગે એ પણ જાણવા જેવું છે કે જ્યાં પ્રભુનું સમવસરણ થયું હોય તે સ્થલે રાજા, રાજાનો મંત્રી, શેઠ અથવા મુખી ચાર શેર ચોખ્ખા અખંડ તંદુલ લઈને દેશનાને અંતે અંદરના ગઢના દરવાજે પ્રવેશ કરે છે, અને જ્યારે દેશના પૂરી થાય ત્યારે તે ચોખાને પ્રભુની સામે ઉભો રહીને જ ઉછાળે, તેમાંના અડધા ચોખા જમીન પર પડતાં પહેલાં જ વચમાંથી ઇન્દ્ર અથવા કોઈ મહર્દ્ધિક દેવ લઇ લે છે. બાકી રહેલા અડધા ચોખામાંથી અડધા ચોખા ઉછાળનાર જ ગ્રહણ કરે છે, અને બાકીના અડધા ચોખાનો એકેક દાણો સર્વજનો શેષ તરીકે ગ્રહણ કરે છે. આ ચોખાના દાણાના પ્રભાવથી છ માસની પહેલાં થયેલા રોગો નાશ પામે છે, અને ભવિષ્યમાં પણ તેટલા કાળ સુધી નવા રોગો ઉત્પન્ન થતા નથી.

સાધુઓ પૈકી જે સાધુએ પહેલાં એક પણ વખત સમવસરણ દેખ્યું જ ન હોય, તે સાધુએ સમવસરણના દર્શનાર્થે બાર યોજન દૂરથી પણ અવશ્ય આવવું જોઇએ. ન આવે તો આયંબિલનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું જોઇએ. આ સમવસરણના સંબંધમાં શ્રી શત્રુંજય માહાત્મ્યમાં એ પણ કહ્યું છે કે ત્રણ ગઢ પૈકી શરૂઆતના રૂપાના ગઢની ભીંત પાંચસો ધનુષ્ય ઊંચાઈમાં, અને ૩૩ ધનુષ્ય ૩૨ આંગળ જાડાઇમાં હોય છે. આ ગઢની પાછળ ૧૫૦૦ ધનુષ્યની અંતરે રહેલી સોનાના ગઢની ભીંત પૂર્વની માફક ઊંચી અને જાડી સમજવી. તેની પછી ૧૫૦૦ ધનુષ્યને આંતરે રહેલી રત્નનાગઢની ભીંત પણ પૂર્વની માફક જ જાડી અને ઊંચી સમજવી.

પ્રશ્ન—પાંચ સમિતિયો પૈકી શરૂઆતની ત્રણ સમિતિને ધારણ કરનાર શ્રી અરિહંત મહારાજા. પોતાને માટે જ કરેલું સમવસરણ કેવી રીતે વાપરી શકે ?

તીર્થંકર નામકર્મ ભોગવ્યા વિના મુક્તિ હોય નહિ અને તે કર્મને ધર્મદેશના દેવા દ્વારાજ ભોગવી શકાય. તેમજ ધર્મ દેશના પણ અરિહંત મહારાજા સમવસરણમાં બેસ્યા વિના આપી શકેજ નહિ. એટલે તીર્થંકર નામકર્મને ભોગવવામાં કારણ હોવાથી અરિહંત મહારાજા–સ્વનિમિત્તે કરેલા સમવસરણમાં પણ બેસી શકે. એમ પિંડવિશુદ્ધગ્રંથની અવચૂરિમાં કહેલ છે. વલી આ સમવસરણની રચના પણ–જે સ્થળે પહેલાં કોઈ પણ વખત સમવસરણ ન થયું હોય. તે સ્થળે અને જ્યાં ઇન્દ્ર વગેરે મહદ્ધિક દેવ પ્રભુને વંદન કરવા આવે તે સ્થળે અવશ્ય થાય. એમ સમવસરણ સ્તવમાં કહેલુ છે. એ પ્રમાણે અગ્યાર અતિશયો પૈકી પહેલા અતિશયનું સ્વરૂપ જણાવ્યું.

વચનાતિશય–ઉપર જણાવેલા સ્વરૂપવાલા સમવસરણમાં બેસીને અરિહંત મહારાજા–પાંત્રીશ ગુણોથી શોભાયમાન અર્ધમાગધી ભાષામાં દેશના આપે છે. ભગવંતની ભાષા અર્ધમાગધી છે. છતાં પણ આ બીજા અતિશયના પ્રભાવથી એટલે વચનાતિશયના પ્રભાવથી તે (અર્ધમાગધી) ભાષામાં આપેલી દેશના દરેક જીવો પોતપોતાની ભાષામાં સમજી શકે છે. જેમ વરસાદનું પાણી જેવા સ્થાનમાં પડે તેવા સ્થાનરૂપે પરિણમે તેવી રીતે ભગવંતની વાણી જે જીવ સાંભળે તે જીવ પોતાની ભાષામાં તરત સમજી જાય–આ દેશના સાંભળતાં ભૂખ અને તરશ પણ યાદ નથી આવતી–તથા એજ વચનાતિસયના પ્રભાવથી યોજન પ્રમાણ ક્ષેત્રમાં બેઠેલા સર્વજીવો એક સરખીરીતે પ્રભુની દેશના સાંભળી શકે છે. (અપૂર્ણ.)

ધર્મ્ય વિચાર

લેખક—ઉપાધ્યાય શ્રી સિદ્ધિમુનિજી.

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૫૦ થી અનુસંધાન)

સ્ત્રી અને પુરૂષના આખા જીવનમાં કયી કયી જરૂરાતો પડશે અથવા સંભવ હશે એ ખ્યાલમાં રાખીને જ તેના લાગતાવળગતાઓએ તેઓના જીવનને આગળ વધારવું જોઇએ. બાલક સમાજહિતની કે ત્યાગમય ધર્મની જીંદગી ગાળશે, અવિવાહિત જીંદગી તે પસંદ કરશે કે વિવાહિત જીવન પસાર કરશે, એ તેને માટે હાલથી જ નકી કેમ કરી શકાય ? માત્ર તે સ્થિતિમાં તેની આજીવિકા નભાવવાનું બલ હાલ ઉત્પન્ન ન કરી શકાય, પણ તેવું બલ ઉત્પન્ન કરી શકાય તેવી ભૂમિકા તો તૈયાર કરી શકાય. 'જેવા વાગે તેવા દેવાશે' ની બીજ ભૂતભૂમિકા તો જરૂર ઊભી કરવી જ જોઈએ.

સર્વ સંયોગોમાં વધારે વધારે સ્વતંત્ર રહી નીતિ અને ધર્મપૂર્વક પોતાની જાતને નભાવી શકે, ગૌરવપૂર્વક જીવી શકે, એવું છોકરા-છોકરીઓના માટે કરી આપવું એ તેના ઉત્પન્ન કરનારાઓની ફરજ છે. એક યુવાન, 'હું શું કરીશ? મને તે નહિ આવડે, મારામાં તેવી શક્તિ નથી, મારામાં નિર્વાહના સાધન ઉભાં કરવાની કળા નથી એવો વિચાર કરે; એક સ્ત્રી, મને સર્વનાં મન વશ કરતાં આવડતું નથી, ઘરનાં કામો વિષે મારામાં ભલીવાર નથી, મારામાં ઘરનો ભાર ઉઠાવવાની ગત નથી, હું ધણીને કાંઇપણ સહાય કરી શકું તેમ નથી એમ મુંઝાયા કરે; એક વિધવા, 'મને છોકરાં ઉછેરવા જેટલું દ્રવ્ય મારો પતિ મુકી ગયો નથી, મારામાં આજીવિકા નભાવવાની શક્તિ કે કલા નથી' આવું બોલી દુભાયા કરે; આવી આવી ખામીઓનાં મૂલ બાલ્યાવસ્થામાં રહેલાં હોય છે. અને તેને માટે જવાબદાર તથા શ્રાપરૂપ બહુધા માબાપો જ ગણી શકાય. આ સમયની ખામીઓથી જ આર્ય સંસારની અને હિન્દુ જીવનની કમબખ્તી થાય છે. છતાં હજુ જૈન જેવી કેટલીય ધર્મજાતિઓ કેવલ ગાઢ અંધારમાં જ ગોથાં ખાયા કરે છે, અને આ ખામીને નિરધાર પૂર્વક નિવારવા કંઇપણ કૃત્ય કરવા માટે તેઓને જરી ય પરવા નથી. નાગરિક માબાપોનાં હૃદયો સંતાનોના ભાવિ વિષે જડ બની બેઠાં હોય, ત્યાં પછી ગ્રામ્ય હૃદયોની વાત જ શી કરવી? જ્ઞાતિઓએ નકામી બહિષ્કારની કે વિધવા વિવાહની વાતો કરવાની નથી, પણ યુવાનીને લાયક શું શું તૈયારીઓ જ્ઞાતિનાં બાલકોમાં થવી જોઇએ એની જ ચર્ચા કરી વ્યવસ્થા કરવાની છે.

વિધવાવિવાહનાં પરિણામે અનેક અનીતિનાં અનિષ્ટ ઉપજાવનારાં, અને ભીખ નહિ માગનારી તથા ભીખ પર જીવવાનું પસંદ નહિ કરનારી એવી કોમને ભીખ લેવા દેવા શીખવનારાં રોદણાં રડનારા લેખકો અને ઉપદેશકોએ આ દિશામાં પ્રયત્ન કરી નવનવા કલેશો, ભંગાણો, અવ્યવસ્થા, ધર્મહાનિ વિગેરે કર્યા કરતાં, ઉમદા ઓજસ અને ખાનદાનીની ખૂબ ખીલવણી થાય તેવો જ પ્રયાસ કરવો જોઇએ. આ દિશામાં તેઓએ શું કર્યું છે? શી સફલતા મેળવી છે? આમાં મુશ્કેલી છે તો કોઇ પણ જૂની પ્રથાને તોડી નાખી નવી પ્રથા ઉત્પન્ન કરવામાં તેથી ય વધારે મુશ્કેલી કયાં નથી? શા માટે ત્યાં મુશ્કેલીનો ખ્યાલ આવતો નથી? ઉપર ઉપરથી સમાર્યા કરવાની વાતો કરતાં પાયામાંથી જ મજબૂતિ કરી સુધારણા, યોગ્ય વ્યવસ્થાપૂર્વક, કરવામાં જ લેખનકલા અને વકતૃત્વ શક્તિનો ઉપયોગ કરવો આવશ્યક અને સ્વપરને હિતાવહ છે. સંતાનોને મોહનાં રમકડાં ન માનતાં ભાવિ જીવનના દ્રવ્ય ભાવ યુદ્ધનાં ઉમદા હથિયાર માનો, તમને તેઓથી ઘણું ઘણું કરાવવાનું છે, કે જે તમને, તેઓને અને તેઓના વંશજોને ઘણું જ હિતકારી નિવડશે. જગતને પણ આથી મહાન લાભ મળશે, ઉછેર, શિક્ષણ અને તાલીમ વિષે વિશેષ વિવેચન અવસરે થશે. (અપૂર્ણ)

....जैन समाजकी स्थिति और कर्तव्य....

लेखक : आर्य जैन मुनि सुखलाल. (स्थानकवासी)

(પુ० ૨ અંક ૧ પૃષ્ઠ ૩૫ થી અનુસંધાન)

प्रथम-चिनगारी.

विवाह का क्या उद्देश था? वह किन नियमों और किस पद्धति द्वारा होता था, यह सब भुला दिया जाकर, वर्तमान में अधिकांश विवाह कार्य विधवाओं भयंकर संख्या बढ़ाने वाला हो रहा है व उससे अत्याचार और व्यभिचार की मात्रा समाज में बढ़ती हुई दिखाई देकर भ्रूणहत्याओं की अवाज भी सुनाई दी जा रही है इस तरह समाज पर दुःख के बादल छाते जा रहे हैं।

समाज में कैसा मूर्खता पूर्ण विचार फैला हुआ दिखाई दे रहा है कि जिन मनुष्यों ने अपनी वृद्धावस्था में पदार्पण किया होने से वानप्रस्थाश्रम ग्रहण करना चाहिये वे अबोध छोटी छोटी बालिकाओं के साथ पाणिग्रहण करते हुए नजर आ रहे हैं। इस तरह ये ही वृद्ध! समाज में विधवाओं की संख्या बढ़ा समाज को उपरोक्त कलंकों से कलंकित कर रहे हैं अगर समाज के हित की कामना किसी के दिल में हो तो ऐसे वृद्ध विवाहों को रोक देना चाहिये जिससे विधवाओं की संख्या न बढ़े और समाज भी कलंकित होने से बचे।

अगर दीर्घ दृष्टि से देखा जायतो ऐसे विवाहों के लिए अकेले वृद्ध ही दोषी नहीं हैं, परंतु वह समाज भी दोषी है जो ऐसे राक्षसीय विवाहों में सम्मिलित होकर मिष्टान्न पर हाथ सफा करते हैं, और जरा भी इस अनीतिपूर्ण कार्य की ओर ध्यान नहीं देते। क्या उनकी यह धारणा है कि इसमें पाप नहीं लगता है? अगर ओर कुछ समय तक समाज का संगठित रूप से इस ओर ध्यान नहीं गया व वृद्धविवाह जैसे नारकीय कृत्य समाज में होते रहे तो विचारवान् पाठक सोच सक्ते हैं कि भविष्य में सभी समाज की हालत और भी भयंकर हो जावेगी।

इसी प्रकार बाल विवाह से भी कम हानि नहीं हो रही है? प्रत्युत वृद्ध-विवाह से कई गुनी अधिक हानि हो रही है।

विवाह-कार्य का उद्देश्य जहां सुख ओर शान्ति पूर्वक गृहस्थाश्रम व्यतीत करना ही समझा जाता था, वहां अब उसे वैषयिकदृष्टि से ही देखा जाता है; यह पतन की कितनी जघन्य सीमा है।

बाल्यावस्था विद्याध्ययन करने की है, न कि इन सांसारिक प्रपंचों में फँसकर इस जन्म के साथ २ आगामी जन्मों को भी दुःखमय बनाने की।

किन्तु आज का अधिकांश समाज कहां इस बात को सोचता है। वह

तो अपनी संतति का मार्ग–रोधक कंटक बनकर सदैव के लिए उसे हर प्रकार से दुःखी बना रहा है।

इससे प्रथम तो समाज में अशिक्षा का प्रचार बढ़ता है, द्वितीय बात यह है कि वह बालक और उसकी सन्तति निर्बल होती हुई चली जाती है, बलहीनता के साथ में अन्य कमजोरियें तो आ ही जाती हैं, और इस प्रकार समाज का प्रत्येक प्रकार से ह्रास होता चला जाता है।

वाल–विवाह के कारण कितने ही होनहार बालक अकाल में ही मृत्यु–ग्रास बनकर सदैव के लिए कितनी ही अबोध बालिकाओं के सौभाग्य सूचक भाल–सिन्दूर को पौंछकर इस अनन्त ज्वालामय संसार में उन्हें घोर करुणापूर्ण रुदन करती हुई छोड़कर चल बसे हैं।

पौत्र पौत्री को शीघ्र देखने की दुष्ट इच्छाने कितने ही गृहों में दुःख की जाज्वल्यमान ज्वालाओं को उत्पन्न की है। इस इच्छा के द्वारा कितने दिव्य प्रासाद पिशाचों के श्मशान बन गये हैं।

आज समाज में कई विधवाएं अपने अवशेष जीवन के दुःखमय दिन किस प्रकार व्यतीत कर रही हैं? और उनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि यही अवस्था रही तो समाज की क्या दशा होगी यह प्रत्येक सहृदय पाठक विचार सकता है।

वर्त्तमान वैवाहिक–चिनगारी में अनमेल विवाह और कन्या बिक्रय का भी कम भाग नहीं है। समाज इनका भी शिकार होकर अत्यधिक हानि उठा रही हैं।

पति अथवा पत्नि दोनों में से किसी भी एक की आयु में अत्यधिक अन्तर होने पर समाज में अव्यवस्था और पाप की और भी अकिक अभि-वृद्धि होती है।

कन्याविक्रय का कितना दुष्ट परिणाम होता है कि धनवान वृद्ध तो तीन २ चार २ विवाह कर लेते हैं और धनहीन कितने ही योग्य सुशिक्षित तरुर्ण आजन्म, अविवाहित ही रह जाते हैं, अंत में वे अपनी उद्दाम यौवनावस्थामें पाप–मार्ग की और डग भरते ही हैं। और उधर वे वृद्ध–पति से असंतुष्टा, मन्मथ–पीडिता, ललित यौवन संपन्ना नववधुएं भी अन्यासक्ता हो ही जाती हैं। इस प्रकार समाज का नैतिक और धार्मिक पतन हो जाता है। तथा बालिकाओं का समान आयु वालों से विवाह नहीं होने के कारण और उधर तरुणों के अविवाहित रह जाने के कारण क्या जन–संख्या की भी कमी नहीं होती है?

इस प्रकार वर्त्तमान की अयोग्य विवाह पद्धति से समाज धन, जन, बल, प्रतिष्ठा, धर्म आदि से हीन होता चला जाता है, दुख अशांति की और डग भरता चला जाता है। और इन्हीं दुर्गुणों के कारण समाज के मनुष्यों के इस जन्म के साथ साथ भविष्य के गर्भ में अवस्थित आगामी जन्म भी दुखमय ही हो रहे हैं।

પ્રશ્નોત્તરો.

પ્રશ્નકાર: **ઝવેરચંદ છગનલાલ સુરવાડાવાલા.**
ઉત્તરદાતા—**પન્યાસજી શ્રીધર્મવિજયજી ગણિ મહારાજ.**

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૫૬ થી અનુસંધાન)

પ્રશ્ન ૧૫–પરભવનું આયુષ્ય ન બાંધ્યું હોય ને ક્ષાયિક સમકિત પામે એવા આત્માઓ અંતર્મુહૂર્તમાંજ કેવળજ્ઞાન પામે એમ કહ્યું છે, પરંતુ જેઓને કેવળજ્ઞાન થવાને હજુ વાર છે, એવા તીર્થંકર ભગવંતો અને તદ્‌ભવેજ મોક્ષ જવાવાળા ગણધરાદિ મહાપુરૂષો કે જે ઉચ્ચ કોટીના મહાપુરૂષો હોય છે. તેઓ સર્વ ક્ષયોપશમ સમકિતીજ હોય છે? શું તેમને ક્ષાયિક ન હોઈ શકે?

જવાબ—ક્ષાયિક સમકિત પામ્યા પછી અંતર્મુહૂર્તમાં જે કેવલજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ કહી છે, તે કોના માટે છે! કે ચાલુ ભવમાં હજુ જે જીવોએ પરભવાયુષ્યનો બંધ કર્યો નથી તે આત્માઓ માટે છે. પરંતુ જે આત્માઓએ પરભવાયુષ્યનો બંધ કરેલ હોય અને તે પછી ક્ષાયિક પામેલ હોય તેઓ કાલધર્મ પામી ચાર ગતિમાંથી કોઈ પણ ગતિમાં જાય છે, ત્યાંથી આયુષ્ય પૂર્ણ કરી ક્ષાયિક સમકિત સહિત મનુષ્ય ભવમાં આવે છે. તેમાં જે તીર્થંકર નામકર્મની નિકાચનાવાળા હોય તે તીર્થંકર થાય અને તે સિવાયના જે હોય તે કેવળજ્ઞાન પામી મોક્ષે જાય છે. તાત્પર્ય એ થયું કે પરભવમાંથી ક્ષાયિક સમકિત લઇને મનુષ્યના ભવમાં જે આવ્યા હોય, તેવા તીર્થંકર ગણધરાદિ મહાપુરૂષોને કેવળજ્ઞાનની પ્રાપ્તિમાં અમુક વિલંબ હોય છતાં તેઓ ક્ષાયિક સમકિતવંત છે, અને જેઓ ઉપર જણાવ્યા મુજબ ક્ષાયિક લઇને ન આવ્યા હોય તેવા તદ્‌ભવ મોક્ષગામી આત્માઓ ક્ષાયિક સમકિત વિનાના પણ હોય છે. તીર્થંકરાદિ તદ્‌ભવ મોક્ષગામી આત્માઓને ક્ષાયિકજ હોય એવો એકાંત નિયમ નથી, ક્ષયોપશમ પણ હોય એટલું જરૂર કે ક્ષાયિક ન હોય ને તેઓને ક્ષયોપશમ સમકિત હોય તો તે ક્ષયોપશમ વિશેષ નિર્મળ હોય.

પ્રશ્ન–૧૬–તીર્થંકરાદિ મહાપુરૂષોને ક્ષાયિક ન હોય ને ક્ષયોપશમ હોય તો તે વિશેષ નિર્મળ હોય એમ કહ્યું. પરંતુ ક્ષયોપશમ સમકિતમાં દર્શન સપ્તકમાંથી એકનો વિપાકોદય અને છનો પ્રદેશોદય એમ સાતે પ્રકૃતિનો ઉદય કહ્યો છે, પછી ચાહે તો તે અતિ મંદપણામાં ઉદય વર્તતો હોય, છતાં એવું ઉદયગત સાતે પ્રકૃતિવાળું જે ક્ષયોપશમ સમકિત, તે ઉચ્ચકોટીના અને ઉચ્ચ અધ્યવસાયવાળા એવા તીર્થંકરાદિ ભગવંતોને શી રીતે ઘટી શકે?

જવાબ—તીર્થંકરાદિ મહારાજોને જે ક્ષયોપશમ સમકિત કહ્યું છે તેમાં સમકિત મોહનીયના પુદ્દગલો વિશેષ પ્રકારે શુદ્ધ થયેલાં સમજવા, જેથી સમકિત ગુણના અંગે કોઈ પ્રકારની ખામી ન આવી શકે, અને બાકી છનો તો પ્રદેશોદય હોય એટલે ઉદય હોવા છતાં તેનું ફળ સ્વ સ્વરૂપે લેશ પણ ન ભોગવાય.

જિનવાણીની મહત્તા.

રચયિતાઃ **મુનિરાજ શ્રી સુશીલવિજયજી.** (પાટણ.)

(ગઝલ....એ રાગમાં)

જિનેશ્વર દેવની વાણી, સકળ સંશય હરનારી;
ભવ સંસાર તારિણી, ચતુર્વિધ સંઘ મનોહારી. જિનેશ્વર૦ (૧)
સર્વ સંતાપ હારિણી, મિથ્યાત્વોચ્છેદ કરનારી;
મોહ તિમીર નાશિની, વૈર વિરોધ વમનારી. જિનેશ્વર૦ (૨)
ક્રોધાનલોપ-શામિની, કંદર્પ દલ દળનારી;
કુબુદ્ધિ નિવારિણી, સુબુદ્ધિ સદ્દબોધ દાતારી. જિનેશ્વર૦ (૩)
કલિમલ પ્રલયિની, ઇન્દ્રીય વૃંદ દમનારી;
મન્મથ સ્થંભિની, રાગ દ્વેષાદિ જીતનારી. જિનેશ્વર૦ (૪)
સમ્યક્ત્વ શુદ્ધ દાયિની, દર્શન જ્ઞાન દેનારી;
ચારિત્રા ચાર સ્થાયિની, સર્વોત્તમ ધર્મ કેનારી. જિનેશ્વર૦ (૫)
સદ્દકર્ણા-મૃત શ્રાવિણી, મધુર પીયૂષ પાનારી;
યોજન લગી વિસ્તારિણી, ભવિક ઓતપ્રોત થાનારી. જિનેશ્વર૦ (૬)
સમગ્ર દોષ વારિણી, ચાર અનુયોગ વદનારી;
ગણધર સૂત્રે ગુંથાણિ, સુંદર અર્થ કથનારી. જિનેશ્વર૦ (૭)
અહિંસા સૂત્ર ભાષિણી, જગત જન્તુ વશકારી;
સર્વ ભાષા પરિણામિની, પાંત્રીશ ગુણે શોભનારી. જિનેશ્વર૦ (૮)
ઉત્પાદ-વ્યય-ધ્રુવાણિ, સ્યાદ્વાદ શૈલિ અનુસારી;
સર્વાંગ મોદ્દ ગારિણી, નિશ્ચય વ્યવહાર ભજનારી. જિનેશ્વર૦ (૯)
મોક્ષ માર્ગ પ્રકાશિની, જનમ મરણ મારનારી;
સ્વર્ગાપવર્ગ દાયિની, દુર્ગતિ દુઃખ ભાગનારી. જિનેશ્વર૦ (૧૦)
નેમિ-લાવણ્ય સૂરીશની, જીવન નૈયાને તારનારી;
દક્ષ-સુશીલ સેવકની; કરમ કટક કાપનારી જિનેશ્વર૦ (૧૧)

ઔપદેશીક સજ્ઝાય.

(ગજલ–ભૈરવી.)

ચાલી જશે પલકમાં, મદમસ્ત આ યુવાની;
ચેતો જરા યુવાનો, દીલમાં વીચાર આણી. ચાલી. ૧
બચપણ વહે રમતમાં, વૃદ્ધત્વ રોગમાંહી;
સદ્ધર્મ કાજ જગમાં, અવસર ખરો યુવાની. ચાલી. ૨
નાટક સીનેમા જોતો, હોટલ નહિ વીસરતો;
વિષયની જવાળાઓમાં, હોમાય જીંદગાની. ચાલી. ૩
દર્શન પ્રભુના કરવા, તુજને વખત ન મલતો;
નટીઓને નીરખવામાં, ભૂલે તું અન્ન પાણી. ચાલી. ૪
સદ્ધર્મ કાજ રૂપીઓ, વાપરતાં મન મુંઝાયે;
થાયે હજારો કેરી, ફેશનમાં ધૂળધાણી. ચાલી. ૫
આજે ભલે હસે તું, પાછળથી રોવું પડશે;
કહે યશોભદ્ર સમજીને, ઉજાળો આ યુવાની. ચાલી. ૬

॥ ॐ ह्रीँ नमोऽर्हद्भ्यः ॥

सानुवाद–जीवविचारप्रकरणम्

अनुवादक: मुनिदक्षविजयजी (पाटण)

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૬૪ થી અનુસંધાન)

इच्चाइणो अणेगे, हवंति भेया अणंतकायाणं।
तेसिं परिजाणणत्थं, लक्खणमेयं सुए भणियं ॥११॥
गूढ–सिर–संधि–पव्वं, सम–भंगमहीरुगं च छिन्न–रुहं।
साहारणं सरीरं, तव्विवरियं च पत्तेयं ॥१२॥

(સાધારણ વનસ્પતિનાં કેટલાંક નામો)

[1]કંદ [2]અંકુર [3]કુંપલો ને પંચવરણી નીલ ફુગ,
સેવાલ ગાજર મોથ વત્થુલ શાક પાલખું જાણુ થેગ;
લીલી હળદર લીલો કચુરો આદુ લીલું જાણીએ,
[4]ટોપ ખીલાડી તણા સર્વે [5]કુણાં ફળ માનીએ. (૮)

ટીપ્પણી–૧ સુરણ આદિ વજ્રકંદ, પદ્મીનીકંદ વગેરે જમીનકંદો. ૨ ફણગા. ૩ ટીશીઓ. ૪ છત્રાકાર વનસ્પતિ. ૫ કુમળાં. ॥૮॥

(સાધારણ વનસ્પતિનાં નામો અને તેના ભેદોનો ઉપસંહાર)

તે પાંદડા [1]શિણ આદિનાં જેની નસો છાની હુએ,
થોર [2]કુંવર ગળો [3]ગુગ્ગળ આદિ ચિત્તે આણીએ;
છેદ્યા છતાં ઉગે ફરી તેવાં વળી જે હોય છે,
[4]અનંતકાય તણા જ [5]ઇત્યાદિક ભેદ અનેક છે. (૯)

(સાધા. વન. નાં એકાર્થક ત્રણ નામો અને તેને પારખવાનાં વિશેષ લક્ષણો)

અનંતકાય નિગોદ સાધારણ ત્રણે એક માનવા,
આ ભાખ્યું લક્ષણ સૂત્રમાં તેને વિશેષે જાણવા;
જેની [1]નસો [2]સાંધા અને [3]ગાંઠાઓ ગુપ્ત જણાય છે,
ભાગ [4]સરખા ભાંગતાં બે જેહના ઝટ થાય છે. (૧૦)

(સાધારણ વનસ્પતિને પારખવાનાં બાકી વિશેષ લક્ષણો)

જે છેદીને વાવ્યું છતાં ફરી [1]ઉગનારૂં હોય છે;
ભંગ સમયે [2]તાંતણા વિણ કાય જેની જણાય છે;
શરીર સાધારણ વનસ્પતિકાયનું તે જાણવું,
વિપરીત તેથી હોય તે[3]પ્રત્યેકનું [4]તનું માનવું. (૧૧)

एग-सरीरे एगो, जीवो जेसिं तु ते य पत्तेया ।
फल-फूल-छल्लि-कट्ठा, मूलग पत्ताणि बीयाणि ॥१३॥

(પ્રત્યેક વનસ્પતિ કાયનું લક્ષણ અને તેના જીવો)

પ્રત્યેક છે જીવ એક તનુમાં એક જેને હોય તે,
જાણ ફલ ફુલ છાલ ને મૂલ કાષ્ઠ પત્રને બીજ તે;
આ [1]સાતમાં જુદા જુદા પ્રત્યેકના જીવ હોય છે,
આખા તરૂમાં તોય પણ જીવ એક જૂદો હોય છે. (૧૨)

ટીપ્પણી—૧પ્રાયઃ જાળું વનસ્પતિ અથવા પીલુડી, ૨ કુમારી. કુમારપાઠું, કુમારી લાબરૂ. ૩ એનું અમુક અંગ. ૪ સાધારણ વનસ્પતિકાય. ૫ સક્કરિયાં, મૂળા, લસણ, ડુંગળી, બટાટા વાંસકારેલાં, કુણી આંબલી, શતાવરી, કઠોળનાં અંકુરા યાને અંકુરા ફુટેલ કઠોળ, પિંડાળુ અને કાકડાશિંગિ વગેરે. ॥૯॥

૧ ગુપ્તનસ. ૨ ગુપ્તસંધિ. ૩ ગુપ્તગ્રંથિ અર્થાત્ ગુપ્તપર્વ. ૪ સમભંગ એ ચાર લક્ષણ. ॥૧૦॥

૧ છિન્નરૂહ. ૨ અહિરૂક્ (હિરૂક્=તંતુ). એ રીતે અનંતકાયને ઓળખવાના ૭ લક્ષણ થયાં. ૩ પ્રત્યેક વનસ્પતિકાયનું. ૪ શરીર. ॥૧૧॥

૧ મૂળ-કંદ-સ્કંધ (થડ)-શાખા-પ્રશાખા-છાલ-પત્ર-પુષ્પ-ફળ-બીજ એ વનસ્પતિમાં દસ અંગ છે; છતાં અહિં કંદને મૂળ સાથે અને શાખા-પ્રશાખાને કાષ્ઠ સાથે ગણીને પ્રત્યેક વનસ્પતિ કાયનાં સાત અંગ ગણ્યાં છે. એમાં પ્રત્યેક વનસ્પતિનાં પુષ્પ પત્ર ફળને બીજ એ દરેક અમુક રીતે એકેક જીવયુક્ત છે. શેષ છ અંગમાં દરેકમાં અસંખ્યાત સંખ્યાત અને એકેક જીવ પણ જુદી જુદી પ્રત્યેક વનસ્પતિઓ આશ્રયી હોય છે. અસંખ્યાત જીવની ગણત્રી પણ એક શરીરમાં એક જીવ ગણીને જ છે. ॥૧૨॥

સજોડે સ્વાર્પણ.

નેમ–રાજુલની જીવનકથા.

[લેખકઃ—બાપુલાલ કાળીદાસ સઘાણી "વીરબાલ"]

(ગત વર્ષના અંક ૧૦, પૃષ્ઠ ૩૦૧ થી અનુસંધાન)

[૫]

ઉગ્રસેનપુત્રી–સ્વપત્ની સત્યભામાની નાની બ્હેન–રાજુલનો કૃષ્ણે રાજા ઉગ્રસેનને ગૃહેજઇ, માગું કરી નેમ સાથે વિવાહ જોડયો. શ્રાવણ શુકલા છઠ્ઠનો લગ્નદિન નિશ્ચિત થયો.

સંયમે અજવાળેલા ભીન્નાવાનને કલામય વસ્ત્રાભૂષણના પરિધાને ઓર દિવ્યતા અર્પી, મલપતી ચાલે, વરરાજા રથમાં બીરાજ્યા. ઢબુકતે ઢોલે, વિધવિધ વાદ્યોના ગગનભર નાદે, આનંદઘેલી યાદવ વનિતાઓના માંગલ્ય ગીતોના મંજુલ સ્વરે, જાન ઉગ્રસેન રાજાની શેરીએ ચાલી, ઘોડલીયાની ઘુઘરમાળ, રથચક્રની નૃપુરરવ તાલબદ્ધ તરેહ તરેહના શબ્દઝંકાર વર્ષાવે છે. ઓ પાડતા વડિલો આગળ છે. યુવનો પડખે પડખે ઘોડા–પડધીએ ધસી રહ્યા છે. જીવનાર્પણનાં સ્વપ્ને ભરી શુભવસ્ત્રા વનદેવી રાજુલ પિતુગૃહની અટારીએથી સૌંદર્યોજ્વલ પતિને નેહભર્યાં નયને નીરખે છે.

"રે ! આ ઉત્સવપુરને વીંધી કલેજામાં તીવ્રવેદના જગાડતો દર્દશૂર કયાંથી આવે છે !"

"એ અવાજ છે કુમાર ! વાડામાં પુરાયેલાં પશુ પંખીડાંનો" સારથીએ જવાબ વાળ્યો.

"પ્રાણી–પ્રદર્શન ભરાયું છે આંહી ! મને તો કાંઈ જાણ નથી. પણ અવાજ તો ભારી વેદના ઉપજાવે છે." નેમે અજ્ઞાન કબુલ્યું.

"અહીં પ્રદર્શન ના હોય કુમાર ! રિવાજથી આપ આટલા અજાણ છો ! આ છે લગ્નોત્સવ નિમિત્તે કન્યા પક્ષ તરફથી અપાતા જમણ–ગૌરવની સામગ્રી !"

"રિવાજ લેખે–સ્નેહ સંબંધો ખીલવવા આ હત્યા થાય છે.–પ્રેમજ્યોત જલતી રાખવા એ ગભરૂડાંનું તેલ પુરાય છે ? રસમને નામે ચાલતી કતલને–લગ્નોત્સવના શોખની નીચવૃતિને–કલંકને માટીમાં મીલાવવા કોઈ "કોણ નીકળે ?"

આ સામા સવાલે નેમને વેદના પુરમાં ફંગોલી દીધા. આ પ્રશ્ન દરેક સામે એકવાર આવીને ઉભતો હતો. આજસુધી વરલાડડા પીઠ દઈને ચાલ્યા જતા હતા. અને સવાલ વધારે મહાન બની સૌ સામે ખોડાતો હતો. કોઇ સ્વભાવિક

ગણી, કોઇ પક્ષ ખેંચી, કોઇ થુંક ઉડાડી, તો કોઇ ભાવી ભણી નજર નાંખી પરણ્યે જતા પણ આથી રસમનો વાંકોવાળ થયો ન્હોતો–બધાની નિરાશા–નિષ્ફળતાએ ઉલટી શક્તિ વધી હતી. નેમ અને પરિણિતજીવન વચ્ચે એજ પ્રશ્ન અત્યારે ખોડાયો હતો, સનાતન એ સવાલ "કોણ નીકળે!" અને વર્તમાન પરિસ્થિતિના વેદના ભારે નેમનું હૃદય ભીંસ અનુભવવા લાગ્યું સલાહ? કોની સલાહ? શી ખપ લાગે? દિલના નિશ્ચય વિના જીવન પ્રશ્નનો તોડ કેમ આવે? સલાહતો જોઇએ તેવી બન્ને દિશાની મળે, પણ હૃદયના દ્વિધાભાવમાં એનો શો ખપ! કુરબાનીનો રાહ અભિપ્રાયનો નથી, દૃઢ નિશ્ચયનો છે. નેમે ક્ષણભર આંખમીંચી દીધી. આંખ ખોલી એમાં "લગ્ન નહિ"ની નિશ્ચલ આગ જલતી હતી. સારથીને વાડાભણી રથ લેવા કહ્યું. રથમાંથી ઉતરી સારથિસહ નેમે સુઝી ગયેલા મૃત્યુભયે પોકાર–કલ્પાંત કરતાં નિર્દોષ પ્રાણીઓને નિર્બંધ કર્યાં, રથે ચડી સ્વગૃહ ભણી પાછો વળ્યો.

આ સમાચાર પ્રસરતાં જાનમાં હાહાકાર વ્યાપી ગયો. મોવડીઓ હાંફળા ફાંફળા પાછળ દોડ્યા, ગીતગાતી સ્ત્રીઓના કંઠ ઠરડાયા, આગળ વધતું પુર અટકી ઓટ થવા લાગ્યો. સંગીત, આનંદ, ઉત્સાહ, મસ્તી, હાસ્યનો જાણે રૂદન, નિરાશા, અંગશૈથિલ્યે પ્રત્યાઘાતથી બમણા જોરે જવાબ વાળ્યો. જમણા અંગના ફરકાટે શંક્તિ રાજુલ ખબર મળતાં મૂર્છિત થતાં ભૂમિશાયી બની, વડિલોને જોસભેર આવતા સાંભળી વિનયી નેમે રથ થંભાવ્યો. આવીને સૌ રથ આડા ઉભી ગયા. કોઈ કંઇ શબ્દોચ્ચાર ના કરી શક્યું. સૌના ચ્હેરાને અશ્રુ, હતાશા, દુઃખ, ગમગીની ઘેરી વળ્યાં હતાં, શાંતિનો બોજ સૌને કચડતો હતો.

"અશ્રુ રોકો! વડિલો! આંસુએ ભીંજાવી વેદનાને ભારે ના બનાવો! લગ્ન ના કરવાં એ મ્હારો દૃઢ નિશ્ચય છે. માતાપિતા! પછી ફોગટ છે આ અશ્રુપાત! નકામું વેદનાના ભુતને ના ચેતાવો–મ્હારા અને ત્હમારા વાસ્તે! વડિલો! માફ કરો મ્હને!" નેમે મહા પ્રયત્ને નિશબ્દતાને વીદારી.

"ભાઇ! નેમ! સમાજના આદિ રિવાજને અનાશકતે ના સહી લેવાય! છતાં આપની ઇચ્છા મુજબ થયું છે. હવે લગ્ન સામે ત્હમને શો વાંધો છે!" હમણાં હમણાં નેમના હૃદય નજીક પહોંચેલા કૃષ્ણે વેદનાસૂરે ઉચ્ચાર કર્યો.

"સ્નેહ ઘેલછામાં કૃષ્ણ વાસ્તવિક્તા ભુલશે! અનાસક્તો આ વિશ્વભણી આંખ મીંચશે પછી કોણ રોકશે આ રક્તપાત ને સંહાર, ગુલામી ને જડતા! અનાશકતો ચાલતું ચાલવામાં માનશે તો વિશ્વને ઉન્નતપંથે દોરવાનો–આદર્શ દ્રશ્ય કરવાનો ભાર કોને શીર છે? ગુલામો એકનો તિરસ્કાર કરી ક્રાંતિ કરશે ત્યાં તો અન્ય સ્થળે ફસાઈ મરશે, અનાશકતોની ફરજ છેરે! એકજ કર્તવ્ય છે અને એક માત્ર તેઓજ યોગ્ય છે. જેઓ સર્વ કર્તવ્ય અનાશક્તભાવે બજાવી શકે છે. એઓનું કર્તવ્યજ ચિરસ્થાયી ને નિર્દોષ બની રહે છે. (અપૂર્ણ)

समाज का ऐकपक्षीय न्याय.

ले. **मुनि भद्रानंदविजय (सेवाड़ी, मारवाड़)**

समाजरूपी रथ के साधुसमाज और श्रावकवर्ग ये दोनों मुख्य चक्र हैं। इन दोनों चक्रों की सुव्यवस्था एवं सुनियंत्रण पर ही समाज के अभ्युत्थान तथा अधःपतन का भार अवलंबित है। हमारी समाज के इतना अधिक ह्रास होने का मुख्य कारण एक मात्र उसकी अव्यवस्था ही है। साधुसमाज और श्रावकवर्ग दोनों अपने उचित एवं अनिवार्य कर्त्तव्यों की उपेक्षा करने लग गये हैं जिसका परिणाम यह हुआ है कि आज हमारा नियंत्रण न तो साधुवर्ग पर ही रहा है और न श्रावकवर्ग पर ही। इसी नियंत्रणाभाव एवं अव्यवस्था के कारण उनमें स्वच्छन्दाचार की मात्रा ज्यादा घर करने लग गई है। यदि श्रावक पर साधुसमाज का और साधुसमाज पर श्रावक का कन्ट्रोल Control रक्खा होता तो समाज की इसप्रकार डांमाडोल स्थिति के होने का प्रसंग ही नहीं आता। किंतु पारस्परिक दृष्टिरागरूपी पिशाच ऐसा करने नहीं देता वह दृष्टिराग के भूल भूलैये में फंसाकर एक दूसरे की अनुचित प्रवृत्तियों की भी उपेक्षा करने के लिये प्रेरणा करता रहता है। कुछ भी हो ऐसा करना स्ववाद कुठाराघात के समान हैं साथ ही अप्रकट रूप से कुत्सित प्रवृत्तियों के साम्राज्य का पोषण कर उसे प्रोत्साहित करता भी है। हमारी समाज के कतिपय नायक श्रावकगण उचितानुचित, सत्यासत्य एवं यथार्थायथार्थ के निर्णय की समता रखते हुए भी वे वाडेबन्दी, पक्षपात या दृष्टिराग में पडकर एक पक्षीय निर्णय कर न्याय का गला घोंट देते हैं। यह किसी भी दृष्टि से समाज के लिये हितावह नहीं है। इससे तो समाज रूपी रथ के दोनों परियों को कीटाणु लगते हैं और वे कीटाणु निकटतम भविष्य में ही खतरा उत्पन्न करनेवाले हो जाते हैं इतना ही नहीं किंतु अंदर ही अंदर पापों की वृद्धि होकर स्वपर अहितकारी भी है। समाज नायकों को एवं साधुवर्गको इस ओर अवश्य लक्ष देना चाहिये। यदि वे एक ओर लक्ष्य देकर एकांगी निर्णय ही कर लेते हैं तो बडे भारी अधर्म एवं पाप का सेवन कर रहे हैं।

हमारी दृष्टि से तो समाज को इतना ठोस एवं योग्य न्याय करया चाहिये कि जिससे फिर कभी कुत्सित घटनाओं एवं कुभावनाओं के उत्पन्न होने का पुनः प्रसंग ही नहीं प्राप्त हो। और समाज का भय साधु तथा साध्वी दोनों के हृदय में सतत बना रहे। जो साधु चारित्र भ्रष्ट होकर समाज में अन्याय एवं अत्याचार कर रहा हो, जो अपनी कुवांसनाओकी पूर्ति हेतु दूसरों को व समाज को लज्जित

एवं नतमस्तक करने में भी संकोच नहीं करता हो, वह पूजा जाय. यह सरासर अन्याय नहीं तो ओर क्या है ? जिनके द्वारा गुप्त पापका पोषण होता हो । उन साधुओ वह साध्वीओं को पुनः नवीन दीक्षा देनी चाहिये कारण मनुष्य से ऐसी प्रवृतियां मोहनीय कर्मवश हो सकती हैं किंतु उनका समाज के समक्ष नवीन दीक्षारूप दण्ड देकर निराकरण करना भी अत्यंत अनिवार्य है । ऐसी भूलें समाज तभी क्षमा कर सकता है जब कि उनके लिये पूर्ण दंड एवं पश्चाताप किया जाय । वास्तव में ऐसे साधुं साध्वी चारित्र पालक नहीं होते किंतु उपरके वक्त एवं समाज पूर्वक ही होते हैं । दूषित साधुओं को सन्मान देना वे समाज को खतरे में धकेलता है । हमारा यह कथन निष्पक्षपातपूर्ण दृष्टि से है हम चाहते हैं कि समाज का साधु एवं श्रावक दोनों पर पूर्ण नियंत्रण रहेता कि अन्याय न होने पावे ।

ન....ફે....ટ....નાં....ન....ખ....રાં

લે. શ્રીમાન ઉંઘી ખોપરી.

અંધેરી નગરીને....રાજા. આ ગત યુગની કહેતી કોઈ વિ. સં. ૧૯૯૮ ના અંધેરી નગરને કોઈ સંબોધતા નહિ. નહિતર બિચારો જૈન સમાજ કકળી ઉઠશે.

“ગત યુગના અંધેરી નગરીમાં એક રાજા હતો. દિવાન હતો. સોનાધિપતિ હતો. જય જય બોલાવતો ભાટ હતો. ને, હજુરીઆઓનો તો શંભૂ મેળો હતો. ત્યારે સમકાલીન અંધેરીમાં બંધારણીય રાજ્ય........! ” આ ભાષણ મારા મોરબ્બી મીત્ર અને જૈન સમાજના, યુવક સંઘો, જુથો, સમુહોના પ્રાણ, આત્મા, સમા મહાત્મા શ્રીમાન શેઠ કડકાભાઈ બાલુસભાઈ (જેમનું પ્યારૂ નામ અમો, “કે. બી” ના ટ્રેડમાર્કથી સંબોધીએ છીએ.) એ ખાંણાના ટેબલ ઉપરથી બંધારણીય પુરવક ભાષણ આપતા હતાં. ત્યારે હું આજના અંધેરીમાં આ પદવી કોને અર્પણ કરાય, એ ગડબડ મંથનમાં પડયો હતો.

થોડોક આત્મ નિર્ણય કર્યો. પછી, સાહિત્ય સ્વામી શ્રીમાન શેઠ, કે. બી. ના વાણી વિહારમાં ભાંગફોડ કરી. ને આજના અંધેરીમાં આ પદવીદાન કોને અર્પણ કરવાં કે જેથી અંધેરી નગરીની- એ માતબર પ્રતિષ્ટા સચ્ચાઇના સ્વરૂપે સચવાઈ રહે ?

આ પ્રશ્નની સાથેજ વિધવાઓના વૃદ્ધ વડિલ શ્રીમાન કે બી. સમકાલીન અંધેરીના માનવંતાઓને. મોટા સમુહ વચ્ચે પદવી દાન અર્પણ કરતા હોય એમ રણુકારી રહ્યા.

એમનો રણુકાર ટમેટા સુપ પીતાં પીતાં આ મતલબનો કાનના યંત્રોએ ટાઈપ કરેલ હતો. અંધેરીની જૈનપુરીએ; બંધારણપુર્વક, લોકશાશનની પ્રણાલીકા મુજબ

આ પ્રશ્નને ચુંટણી પદ્ધતીએ પુછવામાં આવે તો–મને ખાત્રી છે કે આ નામો જગતના વર્તમાન પત્રોમાંથી આપણને વાંચવા મળે. એમનો રણકારનો ઘેરો નાદ ગરજ્યો કે,

રાજા–શ્રીમદઆચાર્યવિજય રામચંદ્રસૂરી·

દિવાન–સંઘવી નગીનદાસ કરમચંદ.

સેનાધિપતિ–જીવતલાલ પ્રતાપસિંહ.

ભાટ–આમાં શ્રીકાન્ત અને ઘડીઆળી વચ્ચે હરીફાઇ રહે.

આ અનામત બેઠક માટે ઉમેદવારો ઘણા ઉભા રહે.

મેં પુછયું કાંઇ કારણ ? ભાટ એ ગતયુગના રાજ્યદરબારમાં ઉચ્ચેનો દરજ્જો હતો. તેમ આ યુગમાં પણ એ માનવંતો દરજ્જો છે.

પત્રકાર, વકીલ, ને ભાષણકાર, એટલે આ યુગના ભાટ.

એટલે. શ્રીકાન્ત, શ્રી. ઘડીઆળી, શ્રી. સીવલાલ મણીઆર, શ્રી. હરગોવીંદદાસ માસ્તર. શ્રી. પટેલ ને ઘણા ઉપનામ ધારીઓ.

આ રણકાર વધુ આગળ વધે ત્યાં મારાં મોરબ્બીનાં પત્નિશ્રી કાંટેથી ખાતાં હતાં. પણ બાપગોતરે કાંટો જોયો ન્હોતો એટલે, કાંટો હાથમાંથી છટકી કઢીના વાટકામાં પડયો. છાંટા અમને સૌને ઉડયા. ને વાતનો ટેબ્લો પડયો.

× × ×

અભિનંદન ખાટી ગયો.

શેઠ ગીરધરલાલ ત્રીકમલાલના પુત્ર ભાઇ હિરાલાલનાં લગ્ન મરીનડ્રાઇવના ગીરીકુંજમાં ઉજવાયાં.

રાધનપુરીઓ મુંબઈમાં લગ્ન કરે, એ નૈતીક તાકાતનો પ્રતિભા સંપત પ્રસંગ ગણાય.

મારા જેવા "નફ્ફટો"

સદ્ગ્રહસ્થોએ સ્વાંગ સજીને, ઘણી વાતો વહેતી કરી. પણ એ બધી વાતો, ટીકાઓ મરીનડ્રાઇવના ગીરીકુંજના બદલે ખાડીમાં ડુબી મરી.

કારણ કે, શેઠ ગીરધરલાલની નૈતિક તાકાત પાસે આ સફેદ સદગ્રહસ્થોનો પુરૂષાર્થ નિષ્ફળ નિવડયો ને કબુતરખાનામાં ફફડાટ થયો.

છતાં "મુંગા મોઢે, ને નીચી મૂંડીએ" બિચારા જીવોને આવવું પડયું.

ને પુરૂષાર્થ પિતાનો લાડકવાયો પુત્ર સર્વનાં અભીનંદન ખાટી ગયો.

× × ×

લગ્ને લગ્ને કુંવારા.

રાધનપુરના નગરશેઠ પનાલાલ અરીમર્દન મસાલીઆના લગ્ન ખુશાલી પૂર્વક ઉજવાઈ ગયાં.

આ લગ્નમાં ઘણા જાનૈઆઓ બ્રહ્મચારીઓ હતા. કેટલાક "ન મળી નારી તો ભાઈ બ્રહ્મચારી" અને કેટલાક ચોથા વ્રતધારી પુન્યવન્તાઓ.

વરઘોડામાં એમનાં જેવા રસીક જીવો જુજ હતા.

આ રસીક જીવોની જીભનો સળવળાટ હતો કે,

"આહ ! આઠ દશ મહિનાનું રસવન્તુ બ્રમચર્ય હવે–અદ્રષ્ય થશે. ને આપણા મીજલસ જલસાઓ ઉડી જશે.

અને ત્યારે મને થયું કે, નગરશેઠ તો લગ્ને લગ્ને કુંવારા.

× × ×

"મનસાગરનાં મોજા"…..

લેખકઃ—બાપુલાલ કાળીદાસ સઘાણી "વીરબાલ"

(પુ. ૨ ના અંક ૧લા ના પૃ. ૩૦ થી અનુસંધાન)

આ ભારત વર્ષમાં બનેલા ધર્મ, દેશ કે સ્વમાનને માટે દેહ આપ્યાના લડાઇમાં મરી ફીટવાના, સતીત્વને ખાતર જીભ કચરીને મરવાના, પતિની પાછળ દેહ બલિદાનના દાખલા ક્ષત્રીત્વ, વીરત્વ, સતીત્વની તવારીખમાં નોંધાયા છે. પણ આજે વૃદ્ધ વયે પથારીમાં મરનારનું મૃત્યુ એથીએ વધુ કિંમતી કાં ગણાય? હસ્તે મુખડે મરનારનાં સૌ ગુણગાન કરતું ને રૂદન ગૌણ હતું. આજે મરનારનાં જીવન પ્રશંસાને પાત્ર ભાગ્યેજ હોય છે. એટલે એમની પાછળ લાંબુ રૂદન લાંબો કાળ ચાલ્યાજ કરે છે. પણ આ તત્વ ઘુસ્યું કયારે? આ સમજાતું નથી પણ એ લાંબા સમયના લાંબા રૂદને જગતનું—આપણું કેટલું સત્યાનાશ વાળ્યું એ કોઈ વિચારશે?

રૂદન સામાજિક થયું એટલે દુઃખ લાગ્યું તે રોયું, ન લાગ્યું તેણે ઢોંગ કર્યા, ને મૃત્યુની પાછળના એ રૂદને મૃત્યુની કરૂણતામાં અને બીકમાં—વિકરાળતામાં વધારો કર્યો. માણસની છાતી દુઃખ વેઠીને મજબુત બનવાને બદલે રૂદનથી પોચી બની. માણસમાં દુઃખ સહન કરવાની તાકાત હતી તે ગઇ. તાકાત કરતાં લાગણીનું જોર વધ્યું અને મૃત્યુ કારમું બન્યું. મૃત્યુને ભેટનારા મૂર્ખા ગણાયા. પગ ઘસડીને મરનારા ભાગ્યશાળી ગણાયા, અને વીરત્વ ચાલ્યું ગયું. સંસ્કૃતિ પ્રધાન આર્યાવર્તને જગતે નિર્બળ અને નમાલું જાણ્યું.

ઉઠ! માનવી! ઉઠ! આંખ ખોલ! સમય ચાલ્યો જાય છે. ભલે તું બાલક હો, કિશોર હો, યુવાન હો કે વૃદ્ધ હો, પણ જેટલો સમય જાય છે તેટલો તું મૃત્યુની નજીક જાય છે. જેટલો ઝડપથી તું દોડે છે. તેટલી ઝડપથી તું કાળના મુખમાં સપડાય છે. કાળ સર્વનું રૂપાંતર કરે છે. તું એમ ના માની શકે એ નિયમ મને લાગુ નહિ પડે. એ નિયમ અટલ અને નિષ્પક્ષપાતી છે. તો તું એવું પગલું ભર કે જેથી મરતાં ઓરતો ના રહે. મૃત્યુ પછીયે તું અમર રહે! નવલ વર્ષનું પ્રભાત બોલે છે.—માનવી! મારી જેમ નવીનતા ધર. જુના આત્મઘાતક ચીલાને છોડી નવો રાહ પકડ. નિર્બળતાનો અંશ ખંખેરી પુરૂષાર્થ કર! અને પુરૂષાર્થમાં આવતાં વિઘ્નને બાળીને ભસ્મ કર. જા વીર બન! મ્હારો આશિર્વાદ છે!

પ્રમાણિક્તા, નીતિ વિગેરે સિદ્ધાન્તોની વ્યાખ્યા કેટલીકવાર મન કલ્પિત બની જતાં આપણે પ્રમાણિક્તાના દંભ તળે જગતને છેતરીએ છીએ, માણસના

અંતઃકરણની જેટલી શુદ્ધિ તેટલીજ તે પ્રમાણિક્તા પાળી શકે છે. એથી ઓછી શુદ્ધિવાળા તેની પ્રમાણિક્તા ઉપર હસે છે. તેને મુર્ખ, વ્યવહાર સૂન્ય કહે છે. પ્રમાણિક માણસને તે વખતે મૌન મુખે બેસી રહેવું પડે છે. અને સામાની પ્રમાણિક્તા માટેની ટુંકી વ્યાખ્યાની મર્યાદા તે સમજી શકે છે. પણ જવાબ માટે નિરૂપાય હોય છે. (અપૂર્ણ)

રાધનપુરની વરખડીની પ્રાચીનતા.

લેખક-**લક્ષ્મીચંદ પ્રેમચંદ.**

(પુ. ૨ અંક ૧ પૃષ્ઠ ૨૯ થી અનુસંધાન)

ગતાંકમાં બતાવ્યા મુજબ બાબી વંશના વહિવટ નીચે રાધનપુરની સીમા આવ્યા પૂર્વે એટલે વિક્રમની પંદરમી સદિની પહેલી પચીસીના સમય આસ-પાસમાં આ ધાર્મિક સ્થાન રાધનપુરમાં હાલ છે, તે સ્થળેજ સ્થાપન થયેલ સંભવે છે. તેમજ આજુબાજુનું કબરસ્તાન પણ કદાચ સમકાલીન હોય તો નવાઇ નહિ. સબબ કે આજના ફતેકોટની આજુબાજુ ભૂતકાળમાં ગામ હોય એમ સંભવે છે. દંતકથા છે કે ભોયરાં શેરીવાળી જગ્યાએ ભૂતકાળમાં તળાવ અને સ્મશાન હતું.

આ પરિસ્થીતિમાં સેંકડો વર્ષો થયા તેજ જગ્યા ઉપર વરખડી નામનું ધાર્મિક સ્થાન આવેલુ હોવા, છતાં આજ પર્યંત આ સ્થાન માટે કોઇ પણ દિવસ બન્ને કોમ વચ્ચે જરા પણ અથડામણુ થવા પામેલ નથી, બલકે રાધન-પુરમાં બન્ને કોમ વચ્ચે અત્યંત ભાઇચારા જેવો વ્યવહાર પ્રવર્તિ રહેલ હતો.

જે જગ્યા અને પ્રસંગનું વર્ણન કરવામાં આવવાનુ છે. તેજ ભૂમિપર પૂર્વે સને ૧૯૩૩ના ડીસેમ્બર માસમાં વરખડીના મકાનના ફ્રન્ટ એલીવેશન (મોવાળ)ની દીવાલના અરગોસર તરફના છેડા પાસે જે સ્થળે આજે કબર ચણીને સાયદાનો ઉભો કરવામાં આવેલ છે, તેજ સ્થળે અમુક વ્યક્તિએ કબર ચણી લેવાની હિલચાલ કરેલ તેટલુજ નહિ પણ કબરસ્તાનમાંથી ઉખડી ગયેલ ઇંટો વીણીને ભેગી કરી તે ઇંટો અને માટીથી બે ત્રણ થર ચોતરાની માફક ચણી લીધેલ. તે ઉપરથી શ્રી સાગરગચ્છના તે સમયના પ્રમુખ અને રાજ્યના ટ્રેઝરરી ઑફીસર વકીલ હરજીવનદાસ દીપચંદની સલાહ મુજબ તા. ૧૭-૧૨-૩૩ ના એક અરજ મ્યુનિસીપાલીટીને અને તા. ૧૮-૧૨-૩૩ ના એક અરજ મે. દિવાન સાહેબને "અમારી પ્રાચિન વરખડીના મકાનના મોવળના ભાગના અરગોસર તરફના છેડા

પાસે મકાનની દીવાલની લગોલગ જે નવી કબર બનાવવાની હિલચાલ થઈ રહેલ છે, તે ન થવા દેવા અરજ કરેલ. જે અરજ ઉપરથી યોગ્ય તપાસણી કર્યા બાદ રાજ્યાધિકારીઓએ તે નવીન કબર બનાવતા અટકાવ્યા અને કરવા ન આપી, તેટલુજ નહિ પણ સમયસુચકતા વાપરી બન્ને કોમને વૈમનસ્યથી બચાવી લીધા.

સને ૧૯૩૩ ના બનેલ પ્રસંગ સમયે ૪૦ અને ૫૦ વર્ષથી નિયમિત દરરોજ શારિરીક બીમારી કે પરદેશગમનના કારણો સિવાય દર્શનાર્થે જનારા, અનેક વૃદ્ધ પુરૂષોને કહેતાં સાંભળેલ છે કે આ જે ચોતરો કરવામાં આવેલ છે. તે જગ્યાતો ઘણા વખતો થયા અમો જમીન જેવી સપાટ જમીન જોતા આવ્યા છીએ, એટલે આ ચોતરો નવેસરથી જ કરવાનો પ્રયાસ થયેલ છે. બાકી આ જગ્યા ઉપર તા. ૧૫–૧૨–૩૩ પહેલા કોઇ પણ જાતનું ચણતર કામ હતું જ નહિ.

વળી સાગરગચ્છની સને ૧૯૩૩ ના ડીસેમ્બર ની તા. ૧૭–૧૮ ની અરજ ઉપરથી રાજયે જે તપાસ કરેલ, તેમાં પણ તે કાર્ય કરનારાઓની કેફીયત લેવાયેલ, એમાં એમ હકીકત મળેલ સંભળાય છે કે “કાલીદાસ કસ્તુર નામના ભોજક કે જે કેટલાક વર્ષો થયા સ્ટેટ લાયબ્રેરીમાં લાયબ્રેરીયન તરીકે નોકર છે. તેમને સ્વપ્નુ આવેલ છે કે તે જગ્યાએ નીચે ઓલીયાની કબર છે તેવી હકીકત અમારા જાણવામાં આવતા કબર બનાવવાની અમારી ઇચ્છા ઉદભવતા અમોએ કામ કરવાનું શરૂ કરેલ” છતાં તે વખતે આ વાતને રાજ્યાધિકારીઓએ ટુંકી કરી થતું કામ બંધ રખાવી દીધું. એટલે પછી વીશેષ હિલચાલ કરવાની કોઇને પણ જરૂરત ન પડી. બાકી કાલીદાસ ગામમાં હોવા છતાં આ લોકો કહે છે તેવુ સ્વપ્નુ આવેલ છે કે નહિ તેવી તેમને પુછપરછ પણ કરી નથી, પરંતુ આ વાત પ્રકાશમાં આવી ત્યારે કાલીદાસે કેટલાકને કહેલ હશે કે આ સ્વપ્ના બાબતમાં હું કાંઇ જાણતો નથી. મ્હારૂ નામ તો તદ્દન ખોટુ જ લખાવેલ છે. પણ તે સમયે થતાં કાર્યને અટકાવી દીધું એટલે બધી તપાસ પણ ગોળ ગોળ રહી ગઈ, અને તે મુજબ તે વખતે ચણાયેલ બે ત્રણ ચોતરા જેવા ઇંટોના થર પણ ચણાયેલ સ્થીતિમાં રહી ગયેલ.

સાગરગચ્છના કાર્યવાહકોએ દુરઅંદેશી વાપરી ચણાવવાનું કામ બંધ કરવાનો હુકમ થયેલ હોવાથી થયેલ ચણતર તો લાંબા અંતરે, વરસાદના પાણીના પ્રવાહે, ઉખડી જઇ ઈંટો આજુ બાજુ તણાઈ જઇ જમીન જેવું પ્રથમની માફક સપાટ થઈ જશે તેમ ધારી ચણાયેલ થરો કઢાવી નાખવાની ખેંચતાણમાં ન પડ્યાં. અને તેથી તે ચણાયેલ ત્રણ થરો તે વખતે રહી જવા પામેલ, તેમજ સરલસ્વભાવી કાર્યવાહકોએ ચણતરનું કામ બંધ થયુ, છતાં તે અંગેની આપણી અરજી ઉપર થયેલ હુકમની નકલ મેળવવાનું પણ ભૂલી ગયેલ, જો તે વખતે તે હુકમની નકલ મેળવાયેલ હોત તો આજે તે આપણને બહુ જ ઉપિયોગી થઇ પડત.

છતાં પણ રાજ્ય તરફના થયેલા હુકમોની નકલ તો રાજ્યની રેકર્ડમાં અરજ કરવાથી ગમે ત્યારે મેળવી શકાય છે. એટલે તે મેળવવામાં કાંઈ મોડું થયું નથી.

સને ૧૯૩૩ માં થયેલ બે ત્રણ થરના માટીના ચણતરને સાડાસાત વર્ષ થવાથી, અને તેના ઉપર સાત ચોમાસાના ધોધમાર વરસાદના પાણીનો પ્રવાહ પસાર થવાથી, તે ચણતર પૈકીની ઘણી ઈંટો ખેંચાઈ ગઈ હતી. અને થયેલ ચણતર અસ્તવ્યસ્ત સ્થીતિમાં થઈ ગયેલ હતું. અને જો પાંચેક વર્ષ હજુક બનાવવાનો પ્રસંગ ઉભો થયો ન હોત, તો તે ચણતર હતું ન હતું પણ થઇ જાત. એટલે આઠ વર્ષ પૂર્વે જેવી સપાટ જમીન હતી. તેવીજ જમીન બની જાત.

પરંતુ રાજ્યાધિકારીઓ બદલાયા તેની સાથે લોકોની ભાવના પણ બદલાણી, અને ન ધારેલી રીતે સને ૧૯૩૩ ના બનેલા ત્રણ થરના અર્ધભગ્ન ચોતરા પાસે તેને ફરીથી ચણાવા માટે, કબરસ્તાનોની ઉખડી ગયેલી જુની ઈંટોને ભેગી કરીને કરેલા ઢગલાઓ, અને માટીનો જથ્થો તા. ૨૧-૭-૪૧ ના રોજ દર્શને જતાં લોકોને જણાતાં શહેરમાં સળવળાટ શરૂ થયો. કે સને ૧૯૩૩ માં બંધ રહેલ ચણતર પાસે નવું ચણતર કરવા સાધનો એકત્ર થાય છે. (અપૂર્ણ.)

ચિત્રકુટ (ચિતોડગઢ) માં જિનાલયોના પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવની થતી તડામાર તૈયારીઓ.

ચિતોડગઢ જે ઉદેપુર રાજ્યના તાબાના પ્રસિદ્ધ દુર્ગો પૈકી એક જગવિખ્યાત દુર્ગ છે. જે દુર્ગ માટે દંતકથા છે કે-"ગઢ તો ચિતોડકા, દુસરા સબ ગઢૈયા." આ કહેવત મુજબ જે સ્થાન દુનિઆભરમાં જગમશહૂર થયેલ છે. અને આજે પણ એ પુરાતન સ્થાનને નિરખવા સેંકડો પરદેશી અને હિંદુસ્તાનના વતનીઓ ઇતિહાસીક દ્રષ્ટીએ આવે છે. તેવા દુર્ગ ઉપર પ્રાચિન શિલ્પકળાથી ભરપૂર જિનચૈત્યો કે જે રાણા પ્રતાપની પડતીના સમયમાં મ્લેચ્છો (મુસલમાનો) ના હાથે તોડનફોડન થયેલના અવશેષો જે હાલ મોજૂદ છે, તેનો જીર્ણોદ્ધાર કરાવી ચિત્રકુટની પ્રાચિનતા અને શિલ્પકળાને ટકાવી રાખવાની, તીર્થોદ્ધારક આચાર્યદેવ શ્રીમદ વિજયનીતિસૂરિજી મહારાજને ઈચ્છા થતાં તેઓશ્રીએ તે કાર્યને સંપૂર્ણ રીતે પાર પાડવા, ઉદેપુરના ઉત્સાહિ સજ્જનો શેઠ મોતીલાલજી વોહરા અને મનોહરલાલજી ચતુરની આગેવાની નીચે એક કમીટી નીમી, તે દ્વારા સં. ૧૯૯૫ ની સાલથી પુનઃજીવન આપવાના કાર્યનો પ્રારંભ કરાવ્યો.

સદર કાર્યની સીમામાં રાજમહેલ પાસે આવેલુ જગવિખ્યાત સત્તાવીસ દેવડીવાળુ, કરમાશા શેઠવાળુ અને ગૌમુખવાળુ એમ ત્રણ જિનાલયો કરાવવાનું રાખતાં, તેનું એસ્ટીમેંટ રૂ. ૬૦૦૦૦) નું થયેલ. આજદિન સુધીમાં તેના જીર્ણોદ્ધારમાં રૂ. ૩૦૦૦૦) આસપાસ ખર્ચાઈ ચૂકયા છે. હજુ કાર્ય ઘણુ છે. પરંતુ આચાર્યદેવની શારિરીક સ્થિતી બે વર્ષ થયા નરમ રહેતી હોવાથી, તેમજ શ્રી સંઘ અને કમીટીની ભાવના તેઓશ્રીનાજ શુભ હસ્તે આ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ કરાવવાની હોવાથી, આચાર્યદેવને વિજ્ઞપ્તિ કરવા સાદડી મુકામે કમીટીના મુખ્ય કાર્યવાહકોએ જઈ આગ્રહભરી વીનવણી કરતાં તેઓશ્રીએ માગસર સુદી ૫ ના સાદડીથી વિહાર કરી અનેક મુશીબતો વેઠી માગસર વદિ ૪ ના ઉદેપુર પધારી ગયા છે. અને સંઘ તથા કમીટીના સભ્યોને ઉપદેશ દ્વારા સિંચન કરી, આ મહોત્સવને ઘણાજ આડંબર પૂર્વક ઊજવવાનો નક્કી કરી તેની રૂપરેખા નીચે મુજબ મુકરર કરાવેલ છે.

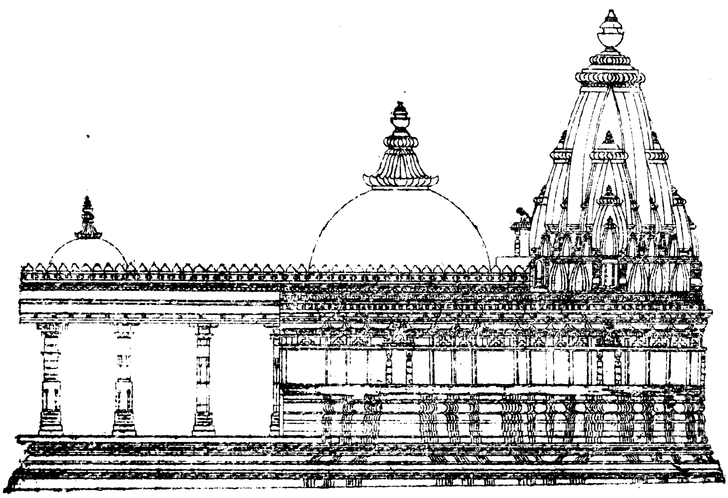

સત્તાવિશ દેવડીનું નિજ મંદિર.

ચિતોડગઢના કિલ્લા ઉપર મંદિરોની નજદિકમાં કોઇ એવી વિશાળ જગ્યા નથી કે જ્યાં આ ઊત્સવ ઉપર પધારતાં માનવસમૂહના રહેઠાણુ માટે વ્યવસ્થા કરી શકાય તેથી મંદિરોથી અડધા માઈલના અંતરે ચોગાન છે, ત્યાં એક નગર બનાવી તેનું નામ **પ્રતાપનગર** આપવાનું ઠરાવેલ છે. જેમાં વ્યાખ્યાન માટે એક ૬૦×૧૦૦ ને ત્રણુ હજારની જનતા બેસી શકે તેવો મધ્યસ્થ ભાગમાં પેન્ડોલ બનાવી તેની આજુબાજુ આઠેક સામીઆના, તેમજ ૫૦ તંબુઓ અને ૨૦૦ રાવતીઓ. ઉપરાંત રસોડા, ભોજનાલય આદિ કાર્યો માટે કનાતોના કેમ્પો. આદિથી ભરચક નગર બનાવી, તેના દરવાજા અને ચોકને નામાંકિત વ્ય-

ક્તિઓના નામો આપવા સાથે ચિતોડગઢમાં ઇલેકટ્રીક ન હોવા છતાં, ઉદેપુરથી મસીન અને સાધનો લાવી નગરને ઇલેકટ્રીક બત્તીઓથી ઝગઝગાટ કરવા ઉપરાંત કબાનો, દરવાજા અને ધ્વજ પતાકાઓથી નગરને સુશોભિત બનાવવામાં આવશે.

મહોત્સવની ઉજવણીમાં પોસ વદિ ૧૦ થી અષ્ટાહનીકા મહોત્સવનો પ્રારંભ કરી, દરરોજ જુદા જુદા પ્રકારની રાગરાગણીથી પૂજાઓ ભણાવવા સાથે પરમાત્માઓને અંગરચનાઓ કરાવવા, ઉપરાંત પોસ વદિ ૧૦ પંચકલ્યાણકની પૂજા અને નૌકારસી શેઠ સાહિબલાલજી સિરોયા તરફથી, પોસ વદિ ૧૧ બારવ્રતની પૂજા, પોસ વદિ ૧૩ નવાણુ પ્રકારની પૂજા અને નૌકારસી શેઠ મગનલાલજી બનોલીયાના ધર્મપત્ની તરફથી; પોસ વદિ ૧૪ કુંભ સ્થાપના અને નવગ્રહાદિ પૂજન, પોસ વદિ ૦)) નંદાવૃત પૂજન અને પ્રતિમા તથા ધ્વજ દંડ અભિષેક, મહા સુદિ ૧ જલયાત્રા વરઘોડો જામનગરવાળા સંઘવી ચુનીલાલ લક્ષ્મીચંદ તરફથી, મહા સુદિ ૨ પ્રતિમાપ્રવેશ, પ્રતિષ્ઠા અને શાન્તિસ્નાત્ર શેઠ રોશનલાલજી ચતુર તરફથી, તેમજ નૌકારસી અમદાવાદ નિવાસી શેઠ ચુનીલાલ ખુશાલદાસ તથા શેઠ મગનલાલ ખુશાલદાસ તરફથી, મહા સુદિ ૩ નવપદની પૂજા આદિ કાર્યક્રમ રાખવામાં આવેલ છે. તેમજ એક કે બે દિવસ જુદાજુદા વિદ્વાન વક્તાઓના વ્યાખ્યાનો અને ભજનો આદિનો પ્રોગ્રામ પણ યોજવામાં આવશે.

આચાર્યદેવશ્રીના ઉપદેશથી તૈયાર થયેલ અગીયાર નાના મોટા જિન ચૈત્યો, જુદી જુદી વ્યક્તિઓને પ્રતિષ્ઠા કરવા માટે અપાઇ ગયેલ છે. તેમજ ઉદેપુર સંઘનો ઉત્સાહ ઘણોજ સારો હોવાથી, તેઓ પૈકી ઘણા સજ્જનો કમીટીની યોજના મુજબ રૂ. ૫૧, ૩૧, ૧૫, ૧૧ અને ૫, ના વર્ગોમાં સભ્યો તરીકે જોડાયેલા છે. વળી આ કાર્યને ફતેહમંદીથી પાર પાડવા માટે કાર્યકરો અને સ્વયંસેવકોનું એક ગ્રુથ આસરે ૧૦૦ ઉપરાંત સભ્યોનું ઉભુ કરવામાં આવેલ છે. ઉપરાંત વાહન અને મજુર વર્ગ માટે પુરતો બંદોબસ્ત રાખવામાં આવશે.

આચાર્યદેવશ્રી ઉદેપુરથી પોસ સુદિ ૧૦ ના વિહાર કરી ચિતોડગઢ પધારવાના હતા, પરંતુ અચાનક તબીયત અસ્વસ્થ થવાથી હાલ વિહાર મુલતવી રહેલ છે. તેથી તરતમાં ઉપાધ્યાય શ્રી દયાવિજયજી મહારાજને શિષ્યસમુદાય સાથે જવાની આજ્ઞા આપેલ છે.

આ ઉત્સવને સફળ બનાવવામાં નામદાર મહારાજાધિરાજ મહારાણા સાહેબ, મે. દિવાનસાહેબ અને અમાત્યમંડળ આદિએ કમીટીની માંગણીઓ મુજબ નિવાસસ્થાનો, તંબુઓ, રાવતીઓ, ઇલેકટ્રીકનું પોરટેબલ ડાયનામા સાથેનું મશીન તેમજ વાયરીંગ, ગ્લોબ આદિ સાધનો, વરઘોડા માટેના હાથીઓ,

ઘોડાઓ, બેન્ડ આદિ લવાજમો, ઉપરાંત ચિતોડગઢમાં એકત્ર થનાર માનવ સમૂહની સગવડ માટે એક સ્પેશિયલ હોસ્પીતાલ અને રક્ષણ માટે પોલીસદળ આદિ અનેક સાધનોની સગવડો પૂરી પાડીને ઘણીજ મદદ આપવાના હુકમો ફરમાવી ઉપકૃત કરેલ છે. વળી ચિતોડગઢના હાકેમ લાલાજી પ્યારેલાલજી સાહેબ અને પોલીસ સુપ્રીટેન્ડેન્ટ સાહેબ તો આ ઉત્સવને પોતાનો સમજી અનહદ જહેમત ઉઠાવી રહ્યા છે.

અંતમાં આ માંગળિક પ્રસંગે પધારનાર સજ્જનોને અમારી વિજ્ઞપ્તી છે કે, મેવાડમાં ટાઢ વિશેષ પ્રમાણમાં પડે છે, તેમજ આટલા મોટા માનવસમૂહને ઓઢવા પાથરવાની સગવડને કમીટી પહોંચી ન શકે જેથી દરેક વ્યક્તિઓ ઓઢવા પાથરવાના પૂરતા સાધનો સાથે લાવવા ખાસ લક્ષમાં રાખશે.

પન્યાસજીનું વિહાર વર્ણન.

ગત ચાતુર્માસ પ્રતાપગઢ (માળવા) માં કરતાં ચોદ પૂર્વ, અક્ષયનીધિ આદિ તપોની આરાધના, દેરાસરોના વહિવટની સાફસુફી અને ધ્વજાદંડ મહોત્સવ, શાન્તિસ્નાત્ર આદિ અનેક ધર્મ ઉદ્યોતના કાર્યો, ઘણાજ આડંબરથી પન્યાસજીના ઉપદેશથી થયાં હતાં. ચાતુર્માસ પૂર્ણ થયે માગસર વદિ ૪ ના વિહાર કરતાં અનેક નરનારીઓનો સમુદાય **દેવળીઆ** સુધી તેમની સાથે ગયો હતો. જ્યાંથી છુટા પડતા લોકોની આંખમાંથી અશ્રુધારા સાથે વૈરાગ્ય ભાવના જાગ્રત થતી હતી. ત્યાં બે દિવસ સ્વામીવાત્સલ્ય થયા હતાં.

દેવળીઆ એ પ્રતાપગઢ રાજ્યની જુની રાજધાનીનું શહેર છે. હાલ તે નગર તદ્દન શૂન્યકાર છે. ખંડેર મકાનો ચારે દિશામાં દેખાય છે. માત્ર પ્રાચિન રાજમહેલ સુરક્ષિત હોવાથી જોવા લાયક છે. જ્યાં બે દેરાસરો છે તેમાં એક શ્વેતામ્બર અને એક દિગમ્બર છે. શ્વેતામ્બર દેરાસરમાં પ્રતિષ્ઠા સં. ૧૭૭૪ ના મહા સુદિ ૧૩ ને રવિવારના થયાનો ઉલ્લેખ દેખાય છે.

દેવળીઆથી વિહાર કરી **ચીકરાડ, કુંગાતળાવ, જેરદા** થઈ **દરીઆવદ** જતાં રસ્તામાં મેણા કોમની જ્ઞાતીના મકાનો સિવાય અન્ય કોઈ દેખાતુંજ નહોતું. કુંગાતળાવમાં ચોકીના મકાનમાં વિશ્રાન્તિ લીધી હતી અને જેરદામાં એક ઠાકોરને ત્યાં સ્થાન કર્યું હતું. દરિઆવદથી શ્રાવકો વ્યવસ્થા માટે આવેલ હતાં. દરિઆવદમાં દિગમ્બરોના ૫૦ ઘર અને શ્વેતામ્બરના વીસ ઘર છે. ત્યાં ચાર દિવસ રોકાઇ જુદા જુદા વિષયો ઉપર વ્યાખ્યાન આપ્યા હતા અને સ્થાનિક સંઘે પૂજા ભણાવી હતી.

દરિઆવદથી માગશર વદિ ૧૨ ના વિહાર કરી **કેશરીઆવદ, પાડા, પાવટી, માલપુર** થઈ સલુમ્બર આવ્યા જ્યાં પણ મેણા જ્ઞાતીના ઘરો સિવાય અન્ય કોઈ દેખાતા નહોતા. આ બાર ગાઉના રસ્તામાં પહાડોના દ્રષ્ય તેમજ છુટક છુટક લાંબા અંતરે ખેતરો અને મેણાના મકાનો સિવાય કાંઇ દેખાતુ નહોતું. પહાડી રસ્તો પણ એવો કે જ્યાં ગાડી કે બીજા વાહનો ચાલી શકેજ નહિ માત્ર છુટા ઘોડા કે બળદ ઉપર મુસાફરી ઘણીજ ધીમી ગતીએ કરી શકાય. આ રસ્તો એટલો ઝાડીઓથી ઘટ બની ગયેલો છે કે અજાણ્યા માણસને તો ભયંકરતા દેખાય તેમજ અનેક વગડાઉ જાનવરો જોવા પણ મળે. જેથી ચોકીયાત સિવાય તો જઇ શકાયજ નહિ, કદાચ કોઇ ઉદ્ધતાઇ કરે તો જરૂર લુટાયા વગર રહેજ નહિ. અમોને સલમ્બુર સુધી પહોંચાડવા દરિયાવદથી ગૃહસ્થો આવેલ હતાં.

સલુમ્બર અઠવાડીયું રોકાઇ જુદા જુદા વિષયો ઉપર ભાષણો આપી લોકોને ઉપદેશ આપેલ હતો. અહીંઆ ૧૦૦ ઘરો દિગમ્બર અને ત્રીસ ઘરો શ્વેતામ્બરના છે, તેમજ એક જિનાલય શ્વેતામ્બર અને ત્રણ મંદિરો દિગમ્બરના છે. બન્ને સંપ્રદાયમાં વાત્સલ્ય ભાવ સારો છે. અહિઆં સાધુ સાધવી માટે ઉપાશ્રય નથી પરંતુ ચાતુર્માસ ગૃહસ્થના મકાનમાં કરાવાય છે. ૧૯૯૦ ની સાલમાં દેશાવરમાં ટીપ કરી અત્રે પાઠશાળા ખોલેલ, જેના નાણાં હોવા છતાં શિક્ષકના અભાવે હાલ પાઠશાળા બંધ છે.

સલુમ્બરથી પોસ સુદિ ૭ ના વિહાર કરી **વસી** આવ્યા, જ્યાં દિગમ્બરના ૨૫ ઘર અને એક દેરાસર છે, ત્યાંથી **જયસમુદ્ર** (ઢેબર સરોવર) ની પાર ઉપર આવ્યા, આ સરોવરમાંથી સાબરમતી નદી નીકળે છે. સરોવરની પારના નીચે હાથીઓ પથ્થરના ગોઠવવામાં આવેલ છે દંતકથા છે કે "હાથીની સુંઢ સુધી પાણી આવે તો ગુજરાતને ઘણુજ નુકશાન થાય છે. હાલ હાથીના પગ સુધી પાણી છે. પાળની ઉપર મહેલાતો અને દેવસ્થાનો આદિના મકાનો બાંધેલા છે, જેમાં ઈલેકટ્રીક લાઈટ ગોઠવવામાં આવેલ છે. મેવાડમાં આ જયસમુદ્ર એ એક જોવાલાયક મશહૂર સ્થાન ગણાય છે. અનેક દેસાવરથી લોકો જોવા આવે છે તેમજ તે સરોવરમાં જળવાહક વિમાનનું એરોડ્રમ પણ છે.

જયસમુદ્રથી વિહાર કરી **ચામડ** આવ્યા જ્યાં એંસી ઘરો અને એક દેરાસર દિગમ્બરનું છે. ત્યાંથી **પ્રસાદ** આવ્યા જ્યાં પચાસ ઘરો અને એક દેરાસર દિગમ્બરનું હોવા સાથે ધર્મશાળા પણ છે. ત્યાંથી પોસ સુદિ ૧૧ ના કેશરીયાજી યાત્રાર્થે પધાર્યા છે. જ્યાં થોડા સમયની સ્થીરતા કરી પોસ વદિમાં ચિતોડગઢ તરફ વિહાર કરી પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ ઉપર ચિતોડગઢ પહોંચશે.

ઉદયપુર (મેવાડ) માં આચાર્યદેવનું અચાનક સ્વર્ગ-ગમન

જેઓ વાંકાનેરના દશાશ્રીમાળી શ્રીયુત ફુલચંદ નેણસીભાઇના સહચારિણી ચોથીબાઈની કુક્ષીએ સંવત ૧૯૩૦ ના પોષ સુદિ ૧૧ ના જનમ્યા હતા અને તેમનું નામ નિહાલચંદ આપ્યું હતું. "પુત્રના લક્ષણ પારણામાંથી" એ કહેવતાનુસાર પોતાની કુશાગ્ર બુદ્ધિમત્તાથી ૧૬ વર્ષની ઉંમરમાં અંગ્રેજી ચોથા ધોરણ અને ધાર્મિક પંચપ્રતિક્રમણ, નવતત્ત્વ અને

કર્મગ્રંથાદિ સુધીનું જ્ઞાન મેળવી એજન્સી વકીલ શ્રી લક્ષ્મીચંદ વાલજીને ત્યાં સારા દરમાયાથી નોકરીમાં જોડાયા, પરંતુ બાળપણથીજ તેઓશ્રીમાં વૈરાગ્ય ભાવનાનો જ્યોત પ્રગટી રહેલ હોવાથી આ સંસારી પ્રવૃત્તિમાં તેમને મુદ્દલ રસ લાગતો જ ન્હોતો. તેથી ઓગણીસ વર્ષની ઉમ્મર દરમિયાનમાં ત્રણ વખત તેઓ ચારિત્ર લેવાની ભાવનાથી આપ્તજનોથી છુપી રીતે ગુરૂદેવની શોધમાં નીકળી પડેલ અને તેવા દરેક પ્રસંગે વડીલો પાછા પકડી લાવેલ. છતાં તેઓએ દરેક સમયે વડીલોને દીક્ષા અપાવવા માટે ઘણી ઘણી વિનવણી કરેલ તો પણ આજ્ઞા ન મળતાં સં. ૧૯૪૯ની સાલમાં તો ઘરે પાછા ન આવવાનો નિશ્ચય કરી વાંકાનેરથી નીકળી જ્યાં આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયસિદ્ધિસૂરિજી મહારાજ બીરાજતા હતા ત્યાં પધાર્યા અને ભાગવતી દીક્ષા લેવાની વિજ્ઞપ્તિ કરી, આચાર્યદેવે સ્પષ્ટ સુણાવી દીધુ કે–**"માતાપિતા આદિ વડીલજનોની સંમતિ વિના દીક્ષા આપવાનો અમારો ધર્મ નથી માટે રજા મેળવીને આવો"** આ જવાબથી તેઓ વિમાસણમાં પડ્યા, પરંતુ ઘેર પાછા ન ફરવાનો મક્કમ નિર્ધાર કરેલો એટલે ત્યાંથી દાહોદ જઇ જિનમંદિરમાં પ્રભુપૂજન કરી મહેરવાડાના રસ્તા તરફ પધારતાં વચમાં આમ્રવૃક્ષ નીચે સંસારી કપડા ઉતારી સાથે લઈ જનાર મિત્રને સોંપી સ્વયં **સ્વહસ્તે શીરમૂંડન કરી સાધુવેશને સંવત ૧૯૪૯ ના અસાડ સુદિ ૧૧ સોમવારના ધારણ કરી** તે ચાતુર્માસ એકલાએ **મહેરવાડા**માં પૂર્ણ કર્યું.

ચાતુર્માસ સંપૂર્ણ થયે વિહાર કરી ઉમતા પધારી ત્યાં બિરાજતા મુનિશ્રી કાન્તિવિજયજી મહારાજ પાસે સં. ૧૯૫૦ ના કારતક વદિ ૧૧ રવિના વિધિપૂર્વક ક્રીયાથી ચારિત્ર ગ્રહણ કરી **પંન્યાસશ્રીભાવવિજયજી** ગણિના શિષ્ય મુનિશ્રી **નીતિવિજય** તરીકે જાહેર થયા. ઉમતાથી વિહાર કરી વડનગર પં. પ્રતાપવિજયજી અને આ. વિજયસિદ્ધિસૂરીજી હતા ત્યાં પધાર્યા અને ત્યાંથી વડીલોની સાથે સીપોર પધારી માંડલીયા જોગ વહન કર્યા, યોગ પૂર્ણ થયે ત્યાંના સંઘે પંદરેક હજારના ખર્ચે મહાન મહોત્સવ કરી પૂજ્ય **પંન્યાસશ્રી પ્રતાપવિજયજી** ગણિવર્યના વરદ હસ્તે **બૃહત દીક્ષા સંવત ૧૯૫૦ ના મહા સુદિ ૪ શુક્રના** અપાવી હતી. તેઓશ્રીએ સંયમ ગ્રહણ કર્યા બાદ ૧૨ વર્ષ ગુરૂવર્ય સાથે જુદાજુદા સ્થળે ચાતુર્માસ કરી ખૂબ પઠનપાઠન કર્યું. તેમજ તે દરમિયાન સં. ૧૯૫૭ ના માગસર સુદિ ૨ ના વીજાપુરના ડાહ્યાભાઇને દીક્ષા આપી તેમનું મુનિ દાનવિજયજી નામ આપી પ્રથમ શિષ્ય બનાવેલ. વળી આ કાળ દરમિ-

યાન આવશ્યક સૂત્રાદિના યોગ વહન કરી સંવત્ ૧૯૬૦ નું ચાતુર્માસ સુરતમાં આચાર્યશ્રી વિજયસિદ્ધિસૂરીજી સાથે કરી મહાન સૂત્ર ભગવતીજીના યોગ વહન સંપૂર્ણ કરી **સંવત ૧૯૬૧ ના માગસર સુદિ ૫ ના** ચતુર્વિધ સંઘ સમક્ષ **ગણિપદ**નો સ્વીકાર કર્યો. ત્યાંથી વિહાર કરી સિદ્ધાચલની યાત્રા કરવા પૂજ્ય આચાર્યદેવ સાથે પાલીતાણા પધાર્યા. જ્યાં ચાતુર્માસ સંપૂર્ણ થયે ઘણાજ આડંબરયુક્ત મહોત્સવથી સંવત ૧૯૬૨ ના કારતક વદિ ૧૧ રવિના પરમપૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રીમદ **વિજયસિદ્ધિસૂરીજી** મહારાજના **શુભહસ્તે** ચતુર્વિધ સંઘ સમક્ષ **પન્યાસ પદ** વિધિ વિધાન સહ આરોપણ કરવામાં આવ્યું હતું.

હવે ગુરૂવર્યની સાથે અને તેમની આજ્ઞાથી ઈલાયદા શિષ્ય વર્ગ સાથે ભિન્નભિન્ન પ્રદેશોમાં વિચરી ચાતુર્માસો કરી અનેક ભવ્યાત્માઓને પ્રતિબોધિ તેઓ દ્વારા શાશનોદ્યોતના અનેક કાર્યો જેવા કે સંઘો, ઉજમણાઓ, ઉપધાનો, પાઠશાળાઓ અને જિનચૈત્યોના જીર્ણોદ્ધાર ઉપરાંત બોડીંગ આદિ કરાવી જૈનશાશનનો ધ્વજ ફરકાવતાં આચાર્યપદ મેળવવાની લાયકાત કેળવતાં રાજનગરના શ્રીસંઘે પંન્યાસશ્રી ભાવવિજયજી ગણિવર્યને ચારિત્ર નાયકને આચાર્યપદ આપવાની વિનવણી કરતાં હર્ષપૂર્વક તેમણે આજ્ઞા આપતાં સંવત ૧૯૭૬ ના માગસર સુદિ ૫ ના શુભ દિને ઘણાજ આડંબરિક ઉત્સવ પૂર્વક ચતુર્વિધ સંઘની હાજરી વચ્ચે પરમ ગુરૂવર્ય **પન્યાસજી શ્રીભાવવિજયજી ગણિવર્ય**ના વરદ હસ્તે શુભાશિષ સાથે **આચાર્ય પદારોપણ**ની વિધિવિધાન પુરઃસર ક્રીયા અનુષ્ઠાન થયા. અને તે દિનથી તેઓ **જૈનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયનીતિસૂરીશ્વરજી**ના નામથી જગવિખ્યાત થયા.

સદ્ગત આચાર્યદેવ દીક્ષાપર્યાય ૪૯ વર્ષ, ગણિપદ ૩૮ વર્ષ, પન્યાસ પદ ૩૭ વર્ષ, આચાર્યપદ ૨૩ વર્ષ ભોગવી જીવનના ૬૮ વર્ષ પૂર્ણ કરી ૬૯ વર્ષના પ્રવેશનો પ્રારંભ કાળ સંવત ૧૯૯૮ ના પોસ વદિ ૩ સોમનાં ઉગતા પ્રભાતના કલાક ૫ ને ૧૦ મીનીટે ઉદેપુર મુકામે આ ફાની દુનિયાનો ત્યાગ કરી પોતાના બ્હોળા શિષ્યપ્રશિષ્ય સમુદાય, અનેક ભક્તજનો અને સકળ જૈનસંઘને વિરહની વેદનામાં મુકી સ્વર્ગવાસ કરી ગયા છે.

સદ્ગતના કાળધર્મ પામવાથી જનકોમને એક ન પૂરી શકાય તેવા મહાન ઉપદેશક અને આચાર્યદેવની ખોટ પડેલ છે. જેથી તેમના નિમિત્તે અનેક પ્રદેશોમાં અષ્ટાહનીકા મહોત્સવ અને શોક સભાઓ થશે એ તો નિર્વિવાદ જ છે.

વર્તમાન-સમાચાર.

ગુડાબાલોતરા આચાર્યદેવ શ્રીવિજયહર્ષસુરીજીના સદુપદેશથી પોસ વદી ૫ ના શ્રી વર્ધમાનતપ આયંબિલખાતાની સ્થાપના કરવામાં આવી, જેમાં પ્રારંભથી શુભ શરૂઆત થતાં શેઠ ચેનાજી પેરાજી, શેઠ આમદાનજી ભીમાજી, શેઠ જવાનમલજી પૂનાજી,શેઠ મકાજી પૂનમજીની વીધવા સમુબાઈ એ હરેકે રૂ. ૧૦૦૧) ની મદદ આપી સંસ્થાને ચિરકાળ ટકી રહે તેવી મજબુત બનાવી દીધેલ છે. લોકોનો ઉત્સાહ અનહદ છે. આયંબિલતપનો લાભ સારો લેવાય છે. ફંડમાં વધારો કરવાનો પ્રયાસ ચાલુ છે. તેમ જ અત્રેના સંઘે આચાર્યશ્રીના ઉપદેશથી જિનચૈત્યોની પ્રતિષ્ટા કરાવવાનું પણ નિશ્ચત કર્યું છે. વાંકલીના સંઘના અતિઆગ્રહથી થોડા સમય માટે આચાર્યશ્રી અને મુનિશ્રી રામવિજયજી વાંકલી પધાર્યા છે.

કાપરડાજી ઉપાધ્યાય શ્રી દયાવિજયજી, મુનિશ્રી ચરણવિજયજી આદિ મુનિમંડળ બીયાવરથી શંકરલાલ મુણોત તરફથી કાઢેલા સંઘમાં કાપરડાજી ઘણા જ સત્કારપૂર્વક પધાર્યા, બાદ અહિંયાંથી મહા સુદિ ૨ ની ચિતોડગઢની પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ ઉપર પહોંચવા માટે વિહાર કરી, પોસ સુદિ ૧૫ લગભગ કરેરા પાર્શ્વનાથ તિર્થ પહોંચી, પોસ વદી ૮ આસપાસ ચિતોડગઢ પહોંચવા વકી છે.

સાતલપુર અત્રે સાતચોવીસીનું સંમેલન થયેલ, તેમાં નીચે મુજબ કાર્ય થયેલ છે.

શ્રી કટારીઆ (કચ્છ વાગડ) ખાતે જૈન બોર્ડીંગ અને વિદ્યાલય સ્થાપવાનો થયેલ ઠરાવ.

શ્રી વાગડ જૈન શ્વેતામ્બર મૂર્તિપુજક સાત ચોવીસી સંમેલનના પ્રયાસ અને પ્રાથમીક સહાયથી, તથા માળીયા નીવાસી શેઠ અમૃતલાલ જાદવજીની દોરવણીથી, સંમેલનની સાંતલપુર મુકામની બેઠકમાં તા. ૧૮-૧૧-૧૯૪૧ ના રોજ કટારીયા ગામે શ્રી વર્ધમાન જૈન બોર્ડીંગ અને વિદ્યાલયની સ્થાપના કરવાનો નિર્ણય કર્યો છે, અને તેનું ઉદ્ઘાટન પણ ચાલુ સાલે વૈસાખ માસમાં થશે. આ વાગડ પ્રદેશમાં જૈનોની વસ્તીવાળા લગભગ ૬૦ થી ૭૦ ગામોમાં બાળકો માટે કયાંય કેળવણીનું સાધન ન હતું જેથી તેના માટે સંમેલનના છવીસ છવીસ વરસના પ્રયાસના પરિણામે આ પ્રદેશમાં કેળવણી અંગે આવી સંસ્થાની સ્થાપના આ પહેલ વહેલી થાય છે. આ સંસ્થા સ્થાપવાને માટે અમુક પ્રારંભીક સહાય સંમેલન તરફથી તથા વ્યક્તિગત મલી છે, અને તેના વિકાસ માટે સહાય મેળવવાની ટ્રાય ચાલુ છે. કેળવણી પ્રીય, દાનવીરોને આ સંસ્થાને ઉત્તેજન આપવાની વીનવણી છે.

आकोला મુનિશ્રી રામવિજયજી મહારાજ અત્રે ચાતુર્માસ હોઇ તેમના ઉપદેશથી. ચૌદપૂર્વ અને નવકારમંત્રના તપની આરાધના ઘણી જ ધામધુમપૂર્વક થવા સાથે ઉજવળીમાં ઘણા જ આડંબરથી વરઘોડો ચઢાવવા ઊપરાંત પાવાપુરીની રચના કરી, અષ્ટાહ્નીકા મહોત્સવ કરવામાં આવેલ હતો. તેમ જ ચાતુર્માસ શેઠ રાજમલજી અમરચંદજીના બંગલે બદલાવ્યું હતું. જેઓ તરફથી પણ રાત્રી જાગરણ, પૂજા, આંગી અને પ્રભાવના થઈ હતી. માગસર સુદિ ૧૩ ના મુનિ રામવિજયજીનો ઓઈલપેઈન્ટ ફોટો શેઠ રાજમલજી અમરચંદજી તરફથી કરાવી દર્શનાર્થે વ્યાખ્યાન હોલમાં ખુલ્લો મુકયો હતો, અને તેજ દિવસે માડવગઢ જવા માટે અહીઆંથી બાલાપુર તરફ વિહાર કરેલ છે.

पालणपुर પન્યાસહિમતવિજયજી મહારાજના વરદ હસ્તે માગસર સુદિ ૩ ના સ્વર્ગસ્થ શેઠ મણીલાલ રવચંદનાં ધર્મપત્નિ દિવાળી બ્હેનને ભાગવતી દિક્ષા પ્રદાન કરી, તેમનું નામ કંચનશ્રીજી આપી સાધવી ચેતનાશ્રીના શિષ્યા તરીકે સંઘ સમક્ષ જાહેર કર્યું હતું. બ્હેન તરફથી આ દિક્ષા મહોત્સવને ઘણા જ ઠાઠમાઠથી ઊજવવામાં આવ્યો હતો.

પન્યાસજી શિષ્ય સમુદાય સાથે અહિઆંથી અમદાવાદ તરફ જવા માટે મેસાણા તરફ વિહાર કરેલ છે. અને અમદાવાદ પહોંચ્યા પછી ટુંક સમયમાં જ પાલીતાણા સિદ્ધાચલના દર્શનાર્થે પ્રયાણ કરવાના છે.

સાક્ષરો, લેખકો અને ભક્તજનોને વિજ્ઞપ્તિ

પરમ પૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રીમદ વિજયનીતિસૂરીશ્વરજી મહારાજ કાળ-ધર્મ પામ્યા હોવાથી તેઓશ્રીની માસિક દિન (મહા વદિ ૩) ના રોજ **શોકાંક** અમારા તરફથી બહાર પાડવાનો **હોવાથી** મર્હુમના જીવન પર પ્રકાશ ફેંકતા પરિચયનું લેખન તા. ૨૦-૧-૪૧ સુધીમાં નીચેના સરનામે મોકલી આપી અમારા ઉત્સાહમાં અને ગુરૂભક્તિમાં વૃદ્ધિ કરશોજી.

લખમીચંદ પ્રેમચંદ

C/o **હાકેમ સાહેબ લાલજી પ્યારેલાલજી.**

ચિતોડગઢ-મેવાડ.

મુદ્રક.-**હીરાલાલ દેવચંદ શાહ.** 'શારદા મુદ્રણાલય." જુમામસ્જીદ સામે-**અમદાવાદ**
પ્રકાશકઃ-**ભોગીલાલ સાંકળચંદ શેઠ. "જૈનધર્મ વિકાસ"** ઓફિસ જૈનાચાર્યશ્રી
વિજયનીતિસૂરીશ્વરજી વાંચનાલય. ૫૬/૧ ગાંધીરોડ-**અમદાવાદ.**

વાંચકોને ?

માસિકના નમુનાનો અંક આપને મોકલવામાં આવે છે. આપશ્રીને અવલોકન કરતાં જો એ સંતોષ આપવામાં સફળ નીવડે તો આશા છે કે, વાર્ષિક લવાજમ સ્થાનિકના રૂા. ૨-૦-૦ અને બહારગામના (પોસ્ટેજ સાથે) રૂા. ૨-૯-૦ મોકલી આપશ્રી માસિકના ગ્રાહક તરીકે નામ નોંધાવશો.

લવાજમ મોઢામાં મોડા આવતી સુદિ ૧ સુધી મોકલી આપશો. કે જેથી વી. પી. થી મોકલતાં વધુ ખર્ચ ન થાય, છતાં જણાવશો તો વી. પી. કરવામાં આવશે.

ગામ પરગામ વિચરતા પૂજ્ય મુનિવરો માસિકનો પ્રચાર કરી, નવા વાંચનરસિક ગ્રાહકો નોંધાવી, માસિકને પ્રોત્સાહન આપશે, એવી અમે આશા રાખીએ છીએ.

કોઇ પણ સામાજીક સંસ્થાઓ કે પૂજ્ય મુનિગણુને અમો, મફત કે ઓછા દરથી માસિક આપી શકીએ તેમ નથી, એ સૂચન થાય.

નમુનાની નકલ મંગાવવાથી મોકલી આપવામાં આવશે. "તંત્રી"

જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયનીતિસૂરિશ્વરજીના ઉપદેશામૃતથી ચિતોડગઢના જિનાલયોના જીર્ણોદ્ધાર માટે મળેલ રકમોની યાદિ.

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૬૩ થી અનુસંધાન)

રૂા. ૩૦૦૫૨-૩-૯	આગળના પૃષ્ઠનો સરવાળો.	
૫૦૧-૦-૦	શેઠ પ્રેમચંદજી ગોમાજી, વાલી.	
૪૭૧-૦-૦	શ્રી સાદડી સંઘની સુપનની ઉપજના. સાદડી.	
૧૦૦-૦-૦	શેઠ ચંદનમલજી કસ્તુરચંદજી. ,,	
૫૦-૦-૦	વૈદ્યરાજ પુખરાજજી જુવાનમલજી. ,,	
૬૨-૦-૦	શેઠ હજારીમલ જવાનમલ મારફત. વાંકલી.	
૩૧૨૩૬-૩-૯		
૨૦૦૧-૦-૦	શેઠ રોશનલાલજી ચતુર મારફત. ઉદેપુર.	આ ચિતોડી રૂપિયા આવેલ છે.
૧૦૦૧-૦-૦	શેઠ મગનલાલજી બિનોલીયાના ધર્મપત્નિ. ,,	
૧૦૦૧-૦-૦	શેઠ સાહિબલાલજી સીરોયા. ,,	
૧૦૦૧-૦-૦	શેઠ મોતીલાલજી ગોડવાડા. ,,	
૧૦૦૧-૦-૦	શેઠ કારૂલાલજી મારવાડી. ,,	
રૂા. ૩૭૨૪૧-૩-૯		

તારીજ. રૂા. ૩૧૨૩૬-૩-૯ કલદાર. રૂા. ૬૦૦૫) ચિતોડી. મળી રૂા. ૩૭૨૪૧-૩-૯

તપાગચ્છ પટ્ટાવલી

સાહિત્યરસિક જનતાને ખાસ તક

ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ ધર્મસાગરજી વિરચિત—

તપાગચ્છ પટ્ટાવલી:—સંપાદક, પં૦ શ્રી કલ્યાણવિજયજી મહારાજ. છપાઈને તૈયાર થઇ પ્રસિદ્ધ થઈ ચુકેલ છે, આ ગ્રંથમાં પ્રભુશ્રી મહાવીરદેવની પાટપરંપરાએ થયેલા આચાર્યાદિ સાથે શાસનપ્રસિદ્ધ અન્ય મહાપુરૂષોનું ઐતિહાસિક દ્રષ્ટીએ ઉપયોગી સાહિત્ય આપવામાં આવ્યું છે.

ક્રાઉન આઠ પેજી ૩૫૦ પૃષ્ઠના, શોભિત ફોટાઓ, અને પાકુ પુંઠું (જેકેટ) સાથેના આ ગ્રંથનું મુલ્ય માત્ર રૂા. ૧-૮-૦. પોસ્ટેજ જુદું

લખો—**જૈન ધર્મ વિકાસ ઓફિસ,** પ૬૧ ગાંધી રોડ, **અમદાવાદ.**

જાહેર ખબર આપનારાઓને

જૈન સમાજને ગામડે ગામડે આ નવા માસિકનો પ્રચાર થશે, અને એથી જાહેર ખબર આપનારાઓ પોતાના પ્રચારનો સંદેશ દૂર દૂર પહોંચાડી શકશે.

માસિક નિયમિત પ્રગટ થતુ હોવાથી જાહેર ખબર આપનારાઓને આ તકનો લાભ લેવા આમંત્રણ આપીએ છીએ, ભાવ નીચે મુજબ.

પૃષ્ઠ	બારમાસ	નવમાસ	છમાસ	ત્રણમાસ	એકમાસ
૧	૪૦	૩૨	૨૪	૧૪	૬
ાા	૨૫	૨૦	૧૫	૯	૪
ા	૧૫	૧૨ાા	૧૦	૭ાા	૨ાા

એક વખત ટુંકી જાહેરાતના કોલમની બે લાઇન યા તેના ભાગનો રૂા. ૧)

અંક સાથે છપાવેલ તૈયાર હેન્ડબીલની માત્ર વહેંચામણીના એક વખતના રૂા. ૧૫)

અંક સાથે છપાવેલા તૈયાર દરેક તોલા અઢી યા તે વજનના કોઇ પણ ભાગના સૂચિપત્રની માત્ર વહેંચામણીના એક વખતના રૂા. ૩૦)

સરતો–(૧) નાણુા અગાઉથી લેવામાં આવશે. (૨) જાહેર ખબર લેવી યા ન લેવી એ તંત્રીની મરજી ઉપર રહેશે. (૩) જાહેરાત પાછી મોકલાશે નહિ.

વધુ ખુલાસા માટે પત્રવ્યવહાર યા પુછપરછ નીચેના શરનામે કરો.

"જૈન ધર્મ વિકાસ" ઓફિસ ૫૬/૧ ગાંધીરોડ, અમદાવાદ.

બહાર પડી ચૂકેલ છે

શબ્દરત્નમહોદધિ શબ્દકોષ ભાગ ૨ જો.

સંગ્રાહક, પન્યાસજી શ્રીમુક્તિવિજયજી.

સંસ્કૃત ભાષા સરળ રીતે આળજીવો સમજી દરેક જૈન અજૈન ગ્રંથોનું વાસ્તવિક અર્થ સ્વરૂપ સમજી શકે, તેવી પદ્ધતિએ જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયનીતિ સુરીશ્વરજી મહારાજની કોષ બનાવી, તેનું પ્રકાશન કરાવી, જનતાને તેનો લાભ લેતા કરવાની મહેચ્છા હતી, તે બાર વર્ષની મહેનતે આજે પરિપૂર્ણ થવા પામેલ છે.

આવા અલભ્ય કોષના બે ભાગો, ક્રાઉન આઠ પેજી એકંદર ૧૮૦૦ પૃષ્ઠના, ગુરૂવર્યોના શોભિત ફોટાઓ અને પાકા પુંઠાં સાથેના આ ગ્રંથના પહેલા ભાગના રૂા. ૮–૦–૦, અને બીજા ભાગના રૂા. ૧૦–૦–૦ પોસ્ટેજ જુદું રાખવામાં આવેલ છે.

પહેલો ભાગ મેળવનારાઓએ બીજો ભાગ પોષ માસમાં બાઈડીંગ થઇ જવાથી મંગાવી લેવા ધ્યાનમાં રાખવું.

બન્ને ભાગના એકીસાથે પાંચ સટ લેનારને પંદર ટકા કમીશન આપવામાં આવશે.

લખો.—**શ્રીવિજયનીતિસુરિજી જૈન લાયબ્રેરી,** ૫૬/૧ ગાંધીરોડ, **અમદાવાદ**

બુકસેલર **મેઘજી હીરજી** ગોડીજીની ચાલ, પાયધુની–મુંબઈ.

ટાઈટલ છાપનાર: શ્રીશારદા મુદ્રણાલય, પાનકોરનાકા, જુમામસીદ સામે–અમદાવાદ.